चन्दामामा
माँ - बच्चों का मासिक पत्र
6

Chandamama, July, '50

Photo by B. Ranganadham

हम खेल रहे हैं !

पंडित डी. गोपालाचार्लु की
अरुणा
स्वर्णजयंती
1898 - 1948
आयुर्वेद के पुनरुद्धारक
गर्भाशय के
रोग दूर करनेवाली

चन्दामामा

विषय सूची

इनके अलावा मन बहलाने वाली पहेलियाँ, सुन्दर रँगीले चित्र और भी अनेक प्रकार की विशेषताएँ हैं।

चन्दामामा कार्यालय

पोस्ट बाक्स नं० १६८६

मद्रास-१

चन्दामामा

माँ-बच्चों का मासिक पत्र

संपादक : चक्रपाणी

वर्ष १ | जुलाई १९५० | अङ्क ११

मुख–चित्र

कन्हैया नन्द के घर बड़े लाड़-प्यार से पलने लगा। लेकिन वह ज्यों-ज्यों बड़ा होने लगा उसकी शरारतें बढ़ती गईं। वह बड़ा नटखट और ऊधमी निकला। वह गोप-गोपिकाओं के दूध दुहते समय वहाँ जाता और बछड़ों की रस्सियाँ खोल देता। अपने साथियों को लेकर ग्वालों के घर में घुस जाता और दूध, दही, मक्खन चुरा कर खा लेता। जब जी भर जाता तो हाँड़ियाँ फोड़ देता। अगर हाँड़ियाँ ऊँचे छीकों पर होतीं तो वह लड़कों के कन्धों पर चढ़ कर उन्हें निकाल लेता। अगर इसी बीच गोपिकाएँ आ जातीं और उसे पकड़ना चाहतीं तो वह बचा कर भाग जाता। इस तरह जब दिन दिन उसका ऊधम बढ़ता गया तो गोपिकाओं ने जाकर यशोदा से शिकायत की। जब यशोदा ने कन्हैया को डाँटा-डपटा तो उसने कहा–'माँ! तुम इनकी बातों पर विश्वास न करो! बताओ तो तुम्हीं, मेरी बाहें इतनी छोटी हैं! फिर छींके पर की हाँड़ियाँ मैं कैसे निकाल सका?' 'तो तुम्हारे मुँह पर मक्खन कैसे लगा?' यशोदा ने पूछा। 'वह तो दूसरे लड़कों ने मुझे पिटवाने के लिए लगा दिया है।' कृष्ण ने कहा। तब भोली-भाली यशोदा ने हँस कर उसको गले से लगा लिया।

सुंदर शिक्षा

एक रोज़ सिक्खों के गुरुवर
श्री गोविन्दसिंह एकाकी
टहल रहे थे नदी किनारे;
धुँधली वेला थी संध्या की।

इतने में इक धनी शिष्य उन
को उस जगह ढूँढ़ते आया।
और भेंट करने को गुरु को
दो सोने के कङ्कण लाया।

उसने कर प्रणाम गुरु-चरणों
में धर दिए कड़े सोने के।
गुरु ने उसको पाठ पढ़ाना
चाहा धन का गर्व छुड़ा के।

एक कड़ा कर में ले धीरे
उलट-पुलट कर देखा-भाला।
'कितना सुन्दर है'—कहते ही
उसे फेंक पानी में डाला।

कड़ा दमक बिजली सा चमका
जाकर गिरा तुरत पानी में।
बेचारे चेले के दोनों
पाँव गड़ गए थे धरती में।

'वैरागी'

उसने सोचा—'फिसल करों से
गिरा नदी में शायद कङ्कण।'
जूते, पगड़ी, छोड़ किनारे
वह जल में जा कूदा तक्षण!

बहुत देर तक ढूँढ़ा उसने
जल में, कड़ा उसे न मिला पर।
आखिर थक हाँफता काँपता
आया चेला जल से बाहर।

उसने कहा 'गुरुजी! अब भी
बता दीजिए कहाँ गिरा वह!
जिससे डुबकी लगा नदी में
उसे ढूँढ़ लाए बन्दा यह।'

तब गुरु ने दूसरा कड़ा भी
फेंक दिया पानी में सत्वर।
कहा—'इसी की तरह गिरा था
पहला भी पानी में जाकर।'

चेला खड़ा रहा गूँगे सा,
खून नहीं काटो तो मुँह पर।
अब मन कुछ आ गया समझ में,
वह मन में रह गया लजाकर।

बालि की पूजा

एक जङ्गल में एक बड़ा सरोवर था। एक दिन वानरों का राजा बालि उस सरोवर की बग़ल से जा रहा था। शाम का वक्त था। भक्तों की देव-पूजा का समय आसन्न हो गया था।

बालि शिवजी का बड़ा भक्त था। वह हमेशा अपने साथ एक सुन्दर पेटी में बन्द करके एक शिवलिंग लिए फिरता था। इसलिए वह उस सरोवर में नहा-धोकर एक जगह झाड़-बुहार कर वहाँ लिंग की पूजा करने लगा। उसी समय उस जंगल के रहने वाले कुछ भील शिकार खेलते हुए उधर से आ निकले। वे बालि को पूजा करते देख कर वहीं खड़े हो गए और तमाशा देखने लगे। उसके बाद उन्होंने बालि की देखा-देखी अपने हथियार वग़ैरह एक जगह डाल दिए और नज़दीक आकर बड़ी भक्ति से शिवलिंग को प्रणाम किया।

उस सुन्दर शिवलिंग को देख कर उनमें भी भक्ति पैदा हो गई और उन्होंने सोचा—"काश! हमारे पास भी एक ऐसा शिवलिंग होता! तब हम भी रोज़ इसी तरह उसकी पूजा करते न!" इतने में बालि की पूजा ख़तम हो गई। उसने शिवलिंग को झाड़ पोंछ कर पेटी में रखने के लिए पूजा की सामग्रियाँ हटानी शुरू कीं। भील लोग भी वहाँ से जाने लगे। इतने में एक विचित्र घटना घटी। भीलों के मारे हुए हिरन सब के सब फिर से जी उठे और देखते ही देखते चौकड़ी भरने लगे। पहले तो भील अचरज के मारे सन्न रह गए। लेकिन जब उन्होंने देखा कि मरे हुए हिरन उठ कर भाग रहे हैं तो उन्होंने झट तरकस से तीर निकाले। लेकिन तीर हाथ में लेने पर उनका अचरज और भी बढ़ गया। उन्होंने देखा कि उनके लोहे के तीर सोने के बन गए हैं।

उषा रानी

इस अचरज में पड़ कर वे मृगों की बात ही भूल गए और इतने में वे आँखों से ओझल हो गए। भील लोग सोने के तीरों की ओर टकटकी लगाए देखते ही रह गए।

तब वालि ने उनसे कहा कि यह सब शिवलिंग का प्रभाव है। यह सुन कर भील तुरन्त वालि के पैरों पर गिर पड़े और गिड़गिड़ा कर कहने लगे—"आप यह शिवलिंग हमें दे दीजिए, जिससे हम रोज़ पूजा कर सकें।" तब वालि खिलखिला कर हँस पड़ा—"जाओ, जाओ! तुम लोग जंगली हो! पूजा करना क्या जानते हो?" उसने कहा। तब भीलों ने जवाब दिया—"आप इस तरह हमारा तिरस्कार न करें। हम भी भगवान के भक्त हैं।" फिर वालि ठठा कर हँसा—"जाओ, जाओ! आए हो बड़े भक्त बनने? मेरी बराबरी करना चाहते हो? आए हो हाथी से टक्कर लेने! जाओ, और कहीं ढूँढो अपना देवता। मैं अपना शिवलिंग तुम को छूने भी नहीं दे सकता।" उसने साफ़-साफ़ कह दिया। और कोई होता तो भीलों से इस तरह की बातें करके जान बचा न पाता। लेकिन वालि स्वयं बड़ा शक्तिशाली था। इसलिए भीलों को मन मार कर वहाँ से जाना पड़ा। वह शिवलिंग उनकी आँखों में गड़ गया था। इसलिए वे पीछे मुड़-मुड़ कर उसकी ओर देखते जा रहे थे। उनके चले जाने के बाद वालि ने शिवलिंग उठा कर पेटी में रखना चाहा तो मालूम हुआ कि वह जमीन में गड़ गया है। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा—"अभी तो मैंने इसे यहाँ से उठाया था। इतने में यह जमीन में कैसे गड़ गया?" उसने फिर जोर लगाया। किंतु लिंग टस-से-मस न हुआ। तब
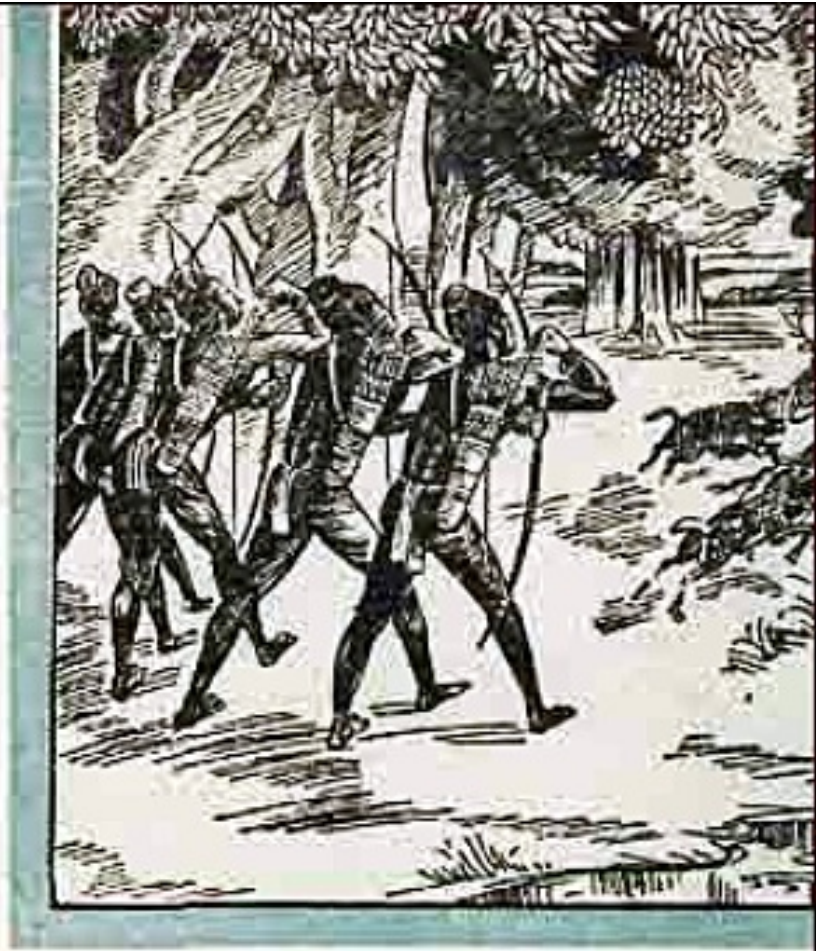
उसने अपनी पूँछ उससे लपेट कर सारी ताकत लगा कर लिंग को उखाड़ना चाहा। लेकिन कोई फल न हुआ। तब वालि के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसकी ताकत ऐसी थी कि बड़े से बड़े पहाड़ को भी वह उखाड़ कर फेंक दे सकता था। लेकिन आज उसे न जाने क्या हो गया था कि एक छोटे से लिंग को जमीन से उठा न सका। उसने सोचा कि जरूर महादेव को किसी न किसी कारण से उस पर क्रोध हो आया है। इसलिए वे अपना गुस्सा इस तरह जता रहे हैं। यह सोच कर वह बहुत व्याकुल हो गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। उसने हाथ जोड़ कर शिवलिंग से कहा—"स्वामी! क्या मुझसे कोई चूक हो गई है? अगर अनजान में हुई हो तो क्या आप मुझे क्षमा नहीं कर सकते? यहाँ बैठे रहने से काम कैसे चलेगा? चलिए न, अपने घर चलें। वहाँ बन्दर सभी हमारी राह देख रहे होंगे। चलिए न चलें?" वह बहुत गिड़गिड़ाया।

तब भगवान महादेव ने प्रत्यक्ष होकर कहा—"वालि! मैं यहीं रह जाना चाहता हूँ। बग़ल में एक सरोवर भी है। भक्तों को यहाँ मेरे दर्शन करने में बड़ी सुविधा होगी। इसलिए अब मैं यहाँ से कहीं न जाऊँगा।" तब वालि को अपना अपराध मालूम हो गया। उसने सोचा—"मैंने अपने आप को भीलों से बड़ा भक्त मान लिया था और घमण्ड से कहा था कि जाओ, मैं यह लिंग तुम्हें नहीं दे सकता। इसलिए भगवान मुझे यह पाठ पढ़ाना चाहते हैं कि उनकी नजर में सभी बराबर हैं। वे सिर्फ़ मेरे ही नहीं, सभी के भगवान हैं।" उसकी समझ में सब कुछ आ गया। उसने फिर

गिड़गिड़ा कर शिवजी से कहा—"भगवन्! मैंने तुम्हारे भक्तों का जो अपमान किया था उसके लिए तुम मुझे क्षमा करो। मैं तुमसे बिछुड़ कर एक पल भी नहीं जी सकता। इसलिए तुम्हें मुझ पर तरस खाकर मेरे साथ आना ही पड़ेगा।" लेकिन उसकी बातें पूरी भी न हुई थीं कि भगवान अन्तर्धान हो गए।

तब बालि लाचार होकर वहीं खड़ा रहा। वह उस शिवलिंग को छोड़ कर नहीं जा सकता था। लेकिन उसको ले जाना भी उसकी ताकत के बाहर था। इतने में उसे एक अच्छा उपाय सूझ गया। उसने सोचा—"शिवजी को यह जगह पसन्द आने का प्रधान कारण यह सरोवर है। अगर मैं किसी तरह इसे पाट दूँ तो फिर इस जगह से शिवजी को उतना मोह न रहेगा और वे मेरे साथ आने को तैयार हो जाएँगे।"

यह सोच कर उसने चारों ओर नजर फेरी कि कोई पहाड़ वगैरह दिखाई दे तो उससे उस सरोवर को पाट दें। लेकिन नजदीक में कोई पहाड़ न था। तब बालि एक सौ योजन तक गगन-मार्ग से जाकर एक भारी पहाड़ उखाड़ लाया और उसे उस सरोवर में डाल दिया।
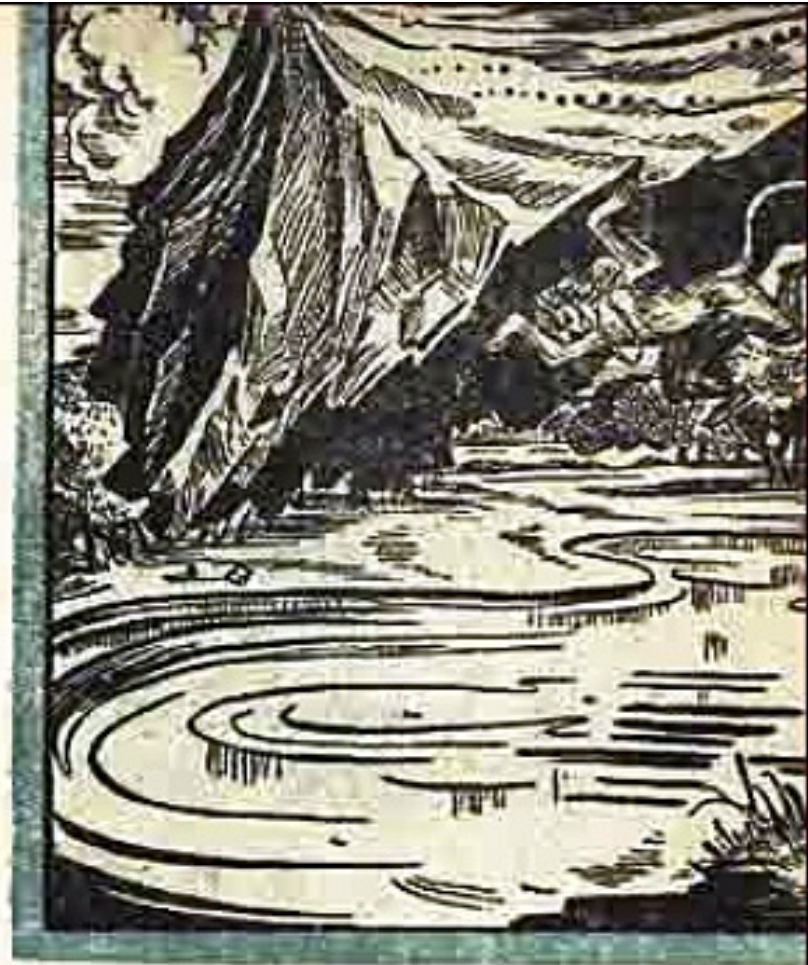
लेकिन बालि ने जो सोचा था ठीक उसके विपरीत हुआ। उस पहाड़ के गिरने से सरोवर तो पटा नहीं। लेकिन उसमें से जल उछल कर एक उमड़ती हुई नदी के रूप में बहने लगा।

उस नदी को देख कर बालि को अपनी लाचारी पर गुस्सा भी आया और दुख भी हुआ। उसने शोकावेश में आकर कहा—"भगवान! अगर तुम मेरे साथ न आओगे

तो मैं यहीं अपना सिर पटक कर मर जाऊँगा।"

तब महादेव को उस पर दया आ गई और उन्होंने फिर प्रत्यक्ष होकर कहा—"अरे पगले! तुमने सोचा कि इस सरोवर के पाट देने से मैं तुम्हारे साथ चला आऊँगा। लेकिन देखो! तुमने सोचा क्या और किया क्या! तुमने सरोवर को पाट देने के बदले एक पवित्र नदी बहा कर भक्तों का उपकार किया है। इस तरह तुमने मुझे भी आनन्द दिया है। इसके अलावा तुम्हारा काम मुझे एक और कारण से बहुत पसन्द आया। तुम जानते ही हो कि मुझे पहाड़ से कितना प्रेम है? इसी से मैं कैलाश पर रहा करता हूँ। मैं अभी सोच रहा था कि अगर यहाँ एक पहाड़ भी होता तो कितना अच्छा होता? तुमने वह कमी भी पूरी कर दी। तुम चाहते क्या हो? यही न कि मैं तुम्हारे साथ आऊँ? अच्छा! अब मैं लिंग-रूप में तुम्हारी पेटी में बन्द रहने के बजाय स्वयं तुम्हारे हृदय में अपना निवास बना लूँगा। अन्य भक्तों के लिए इस लिंग को यहीं रहने दो।" यह कह कर महादेव ने वालि के हृदय में प्रवेश किया।

वालि ने जब आँखें मूँद लीं तो ऐसा मालूम हुआ कि शिवजी एक ज्योति के रूप में उसके हृदय में प्रकाशित हो रहे हैं। वह आनन्द से भर कर भगवान का ध्यान करते हुए घर चला गया। दूसरे दिन भीलों ने वहाँ आकर देखा तो वहाँ शिवलिंग तो था ही। साथ ही एक पहाड़ खड़ा था और एक नदी भी बह रही थी। उस दिन से वे भी शिवजी की पूजा करते हुए पाप-विमुक्त हो गए।

इस तरह भगवान शिव ने वालि और भीलों दोनों को सन्तोष दिया।

थोड़ी ही देर में सारे श्रीनगर में यह बात फैल गई कि रानी नागवती को भुतहा फकीर हर ले गया है। पालने में लेटे हुए बच्चे को देख कर नागवती की बहनों ने रोते हुए कहा—"हाय बेटा! तू कितना अभागा है! तेरे पैदा होने के पहले ही तेरे पिताओं को लड़ाई में जाना पड़ा। तेरे पैदा होते ही तेरी माँ को फकीर हर ले गया।"

श्रीनगर में जितने जवाँ-मर्द बहादुर थे, सब शरमा गए कि फकीर उनके रहते क़िले में प्रवेश करके नागवती को हर ले गया। उन सबने एक जगह पञ्चायत करके तै किया कि सातों राजाओं को यह ख़बर भेजी जाय। लेकिन कैसे? हरकारों को भेजने से तो उन्हें जङ्गलों और पहाड़ों को पार कर वहाँ तक पहुँचने में बहुत दिन लग जाएँगे। इसलिए उन्होंने बाज़ों के द्वारा ख़बर भेजने की ठहराई। उन्होंने कई पत्र लिखे कि 'आप के एक लड़का हुआ है। लेकिन नागवती को फकीर हर ले गया है। बच्चा कुशल से है और उसे दाइयाँ पाल रही हैं।' फिर उन्होंने उन पत्रों को मोड़ कर मज़बूत धागों से बाज़ों के गले में बाँध दिया और उन्हें गाँव के बाहर ले जाकर उड़ा दिया। तीसरा पहर होते होते बाज उड़ कर रामपुर में राजाओं के खेमों पर जा बैठे।

जब सातों भाइयों ने पत्र खोल कर पढ़े तो उनके क्रोध का ठिकाना न रहा। उनकी तलवारें आप से आप म्यानों से निकल गईं। उनके साथ बारह हजार सेना थी। दो सौ तोपें थीं। जैसे राम ने रावण को मार कर सीता का उद्धार किया था उसी तरह उन्होंने

तुरन्त फ़क़ीर के क़िले पर चढ़ाई करके, उसे मार कर नागवती को छुड़ा लाने की तैयारियाँ कीं। तुरन्त शङ्ख और शृङ्ग की ध्वनि होने लगी। कूच का डङ्का बज उठा। बड़ी धूम-धाम से सारी सेना वहाँ से चली। बाघनगर और गंगानगर से होते हुए चौथे दिन तक सारी सेना नगवडीह पहुँची। तुरन्त फ़क़ीर के क़िले के चारों ओर घेरा डाल दिया गया। पहर दिन चढ़ते चढ़ते तोपों ने क़िले पर तीन बार आग उगली। लेकिन एक गोला भी न दीवारों से लगा और न दीवारों के पार किले में ही पड़ा। सारे गोले राह में ही चूर चूर होकर नीचे गिर गए। दीवार पर जरा सा धब्बा भी न लगा। यह सब फ़क़ीर के जादू की करामात थी।

इतनी बार तोपें दागने पर भी जब क़िले की दीवारों पर कोई आदमी न दिखाई पड़े तो सिपाहियों को शक हुआ कि शायद क़िले में कोई नहीं है। तब उन्होंने दीवारों से सीढ़ियाँ लगा कर कुछ सिपाहियों को ऊपर चढ़ा दिया। जब उन सिपाहियों ने नीचे झाँक कर देखा तो उन्हें क़िले में एक भी मर्द न

दिखाई दिया। फकीर द्वारा हर लाई हुई औरतें जहाँ तहाँ घूम रही थीं। आखिर उन्हें मसजिद के बाहर ठण्डी हवा में खाट पर पड़ा सोता हुआ फकीर दिखाई दिया। उसे देखते ही सिपाहियों ने नीचे इशारा किया और तुरन्त तोपें क़िले की दीवारों पर चढ़ाई गईं।

इतने में प्यारीबाई ने जब क़िले की दीवारों पर सिपाहियों को देखा तो उसने फकीर को थपथपा कर जगाना चाहा। उसने कहा—" उठो, फकीर! जागो! जागो! क़िले पर दुश्मन चढ़ आए हैं। तुम्हारा सर्वनाश होना ही चाहता है। उठो! उठो!" लेकिन फकीर न जागा। तब प्यारी अन्दर गई और कल्छुल तपा कर ले आई। उसने फकीर को उससे दाग दिया। फिर भी फकीर खुर्राटे लेता ही रहा।

तोपें फिर गरज उठीं। इस बार फकीर पर निशाना लगाया गया। लेकिन फकीर को ऐसा लगा जैसे खटमल काट खा रहे हों। वह आँखें मलते हुए उठा। दीवारों पर सिपाहियों को देखते ही उसने समझ लिया कि दुश्मन आ गए हैं। वह तुरन्त नागवती को साथ

'अच्छा! अब हम खुद लड़ने जाते हैं।' यह कह कर फ़कीर ने कमरबन्द कस कर हाथ में एक सोटा लिया और मुट्ठी भर भभूत हाथ में लेकर 'या खुदा! या खुदा!' कहते हुए शत्रु-सेना पर टूट पड़ा। पास पहुँचते ही सिपाहियों ने उसे घेर कर टुकड़े टुकड़े कर डाला। लेकिन यह क्या—वह तो वहाँ खड़ा हुआ है! वहाँ भी मार डाला गया, तो दूसरी ओर खड़ा दीख पड़ा; इस तरह न जाने वह कितनी बार मारा गया और कितनी बार जहाँ का तहाँ खड़ा दीख पड़ा! आखिर सिपाहियों ने झला कर उसे मारा और तुरन्त उसके शरीर के टुकड़ों को चिता में जला डाला। उन्होंने राख को बटोर कर एक तालाब में फेंक दिया। लेकिन फ़कीर फिर पानी पर चलता नज़दीक आया और गरज कर बोला—"अब तक तुम लोगों ने अपनी सारी ताक़त आजमा ली। अब देखो हमारी ताक़त!" यह कह कर उसने थोड़ी सी भभूत चारों ओर उड़ा दी। देखते-देखते दुश्मनों के काले-काले पहाड़ के से हाथी काले पत्थर की मूरतें बन गए। घोड़े सफेद पत्थर बन गए। ऊँट गेरू के-से लाल पत्थर बन कर खड़े थे। बारह हजार पैदल सिपाही कङ्कड़-पत्थर के ढेरों में

लेकर मसजिद की छत पर चढ़ा। नागवती ने जब अपने पति और उनकी सेना को देखा तो वह आँसू बहाने लगी। यह देख कर फ़कीर ने कहा—"पगली! रोती क्यों है? ये हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। तुम डरो नहीं। देखो, अभी मेरी करामात!" यह कह कर उसने एक जादू की लाठी निकाली और कुछ मन्तर पढ़ कर उसे दुश्मनों की ओर उड़ा दिया। लाठी उड़ी और शत्रु-दल के सिपाहियों के ऊपर बेभाव की पड़ी। तड़ातड़ की मार से घबरा कर सिपाही भागने लगे। वह लाठी यों तीन सौ दुश्मनों को मार कर फ़कीर के पास लौट आई।

बदल गए। तोपें मिट्टी की हाँड़ियाँ हो गईं। सेना के डेरे-तम्बू काँटेदार झाड़ियाँ बन गए। सातों राजा साँप की बाँबियों की तरह खड़े थे। तीनों मन्त्री पत्थर के ढोके बने हुए थे। यों सारी की सारी सेना अचानक जड हो गई। पल भर में सब ओर सन्नाटा छा गया। फकीर ने नागवती के पास लौट कर कहा—"देख! दुश्मनों का नामो-निशान भी नहीं रह गया। देख ली न तूने मेरी बहादुरी?" यह कहते हुए उसने उसका हाथ पकड़ना चाहा। लेकिन नागवती ने दूर हट कर कहा—"सावधान! अगर व्रत पूरा होने के पहले तूने मुझे छुआ तो तेरा सिर टूक-टूक हो जाएगा।"

श्रीनगर में जब यह खबर पहुँची कि सातों राजाओं और बारह हजार सेना में एक भी जीता न बचा, तो सारे शहर में शोक छा गया। वह नगर ही अनाथ हो गया। नागवती की बहनें पछाड़ खाने लगीं। जहर खाकर प्राण छोड़ने को तैयार हो गईं। लेकिन फिर नागवती के बच्चे को कौन पाले-पोसेगा? इसलिए वे कलेजे पर पत्थर धर कर रह गईं और उस लड़के की देख-भाल में किसी तरह दिन काटने लगीं। नागवती के लड़के का नाम बालचन्द्र था। वह धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। पाँचवें साल में आते ही उसका अक्षराभ्यास हुआ। लड़के ने एक ही घड़ी में वर्णमाला सीख ली। दूसरी घड़ी में बारह-खड़ी पूरी हो गई। थोड़े ही दिनों में बालचन्द्र ने सभी पवित्र ग्रन्थ पढ़ लिए।

उसके बाद उसे अस्त्र-शस्त्र चलाने की शिक्षा देने के लिए तीन आचार्य नियुक्त किए गए। बालचन्द्र ने थोड़े ही दिनों में कुश्ती लड़ना सीख लिया। तीर और तलवार चलाने में ऐसा होशियार हुआ कि उसका निशाना अचूक प्रसिद्ध हो गया। उसकी वीरता देख कर नगर के सब लोग प्रसन्न होने लगे। बड़े-बूढ़ों ने सिर हिला कर कहा—"यह आगे चल कर अपने बाप-दादों से भी बड़ा प्रतापी होगा।"

एक दिन की बात है। बालचन्द्र खेल रहा था। इतने में नगर के पूजारी की बहू पानी भर कर घर लौटने लगी। यह देख कर बालचन्द्र को शरारत सूझी। उसने घड़े पर एक तीर छोड़ा। वह तीर घड़े को छेद कर उस औरत के अँगूठे में लगा। खून बहने लगा। तब वह गुस्से से भर कर बोली—'कलमुँहा कहीं का! तेरी माँ वहाँ फकीर के घर में तेरे नाम को रोती है और तू यहाँ गाँव की बहू-बेटियों के घड़े फोड़ता फिरता है? अरे! अपनी यह वीरता उस फकीर पर क्यों नहीं दिखाता?' यह सुन कर लड़का हका-बका सा खड़ा रह गया। उसके लिए यह एक दम नई बात थी। उसने पूजारी की बहू को डरा-धमका कर सारा किस्सा जान लिया। नागवती को कैसे फकीर हर ले गया, कैसे उसके पिता और उनके छहों भाई सेना साथ लेकर उसको छुड़ा लाने गए और वहाँ फकीर के जादू के बल से पत्थर की मूरतें बन गए, यह सब उसको मालूम हो गया। उसने पूजारी की बहू से क्षमा माँगते हुए कहा—"मैं यह सब नहीं जानता था। तुमने आज मेरी आँखें खोल दीं। तुम मेरी माता हो। मुझे आशीष दो। मैं फकीर को दंड देने जाऊँगा।"

पूजारी की बहू ने आशीष देकर कहा—"बेटा! तुम जुग-जुग जीवो और अपनी माँ का उद्धार करो!"

बालचन्द्र वहाँ से सीधे महल में गया। जाकर खाट पर लेटा लेटा सोचने लगा। न नहाया, न खाया-पिया। किसी से कुछ बोलता चालता भी नहीं, मानों गूँगा हो गया हो। तब उसकी छहों माताएँ आकर गिड़गिड़ाने लगीं—"बेटा! तुमको क्या हो गया है! क्या किसी ने कुछ कहा-सुना है? हमसे क्यों नहीं बोलते हो?" आखिर बालचन्द्र ने दृढ़-स्वर में पूछा—"बताओ, मेरे माँ-बाप कहाँ हैं?" "हम ही तुम्हारी माँ हैं।

तुम्हारे पिता मर गए।" उन्होंने जवाब दिया। "तो क्या मैं समझ लूँ कि मैं तुम सब की कोख से पैदा हुआ हूँ? सच बताओ, मेरी माँ कहाँ है? बताओगी कि नहीं?" उसने फिर पूछा। "हाय बेटा! किस चुड़ैल ने यह आग लगाई है? उसके भी बाल-बच्चे होते तो वह यह आग क्यों सुलगाती?" उन्होंने रोते-पीटते कहा। 'क्यों नाहक किसी को दोष लगाती हो? तुम सच कहो! डरने की कोई बात नहीं है।' उसने हठ किया।

आख़िर लाचार होकर उन्होंने सारी कथा सुनाई और कहा—"बेटा! हमारे वंश में अब तुम एक ही बचे हो। इसीलिए हमने तुम्हें इतने लाड़-प्यार से पाल कर बड़ा किया है।"

"अच्छा! तो अब मैं अपनी माँ को छुड़ाने चला। तुम सब मुझे आशीर्वाद दो।"

"हाय बेटा! तुम वहाँ कैसे जाओगे? वह भुतहा फकीर जो बारह हजार सेना को खा गया, तुम्हें कैसे जीता बचने देगा? अगर तुम वहाँ जाना ही चाहते हो तो पहले हम सबको अपने हाथ से जहर दे दो। फिर जहाँ तुम्हारा जी चाहे चले जाना।" उन्होंने रोते हुए कहा।

"माँ! तुम व्यर्थ अधीर क्यों होती हो! डरो नहीं। मैं बेले के पौधे लाकर महल के सामने लगा दूँगा। तुम दिन में तीन दफे उन्हें सींचना। जब तक वे पौधे हरे-भरे बने रहेंगे समझना कि मैं सकुशल हूँ। जब वे सूख जाएँ तो जान लेना कि मेरी आयु पूरी हो गई।" इस तरह बहुत कुछ कह-सुन कर बालचन्द्र ने उनको ढाढस बँधाया।

बालचन्द्र ने खा-पी कर कुछ कलेवा बाँध लिया। तब उसने अपने पिता के सभी आभूषण पहन लिए। कानों में मोतियों की बालियाँ पहनीं। हाथों में सोने के कड़े पहने। गले में रत्नों की मालाएँ पहनीं। अशर्फियों की थैली कमर में कस ली। फिर तल्वार लटका कर, दुपट्टा कंधे पर डाल लिया और छहों माताओं के चरण छूकर वहाँ से चल पड़ा। [सशेष]

अंध-विश्वास

एक गाँव में एक ग़रीब आदमी रहता था। उसका नाम था भोलाराम। वह रोज़ जङ्गल जाकर लकड़ियाँ तोड़ लाता और गाँव में बेच कर अपनी जीविका चलाता। ग़रीबी के मददगार की तरह उसके कई बच्चे भी पैदा हो गए थे। वह किसी तरह साग-सत्तू खाकर एक झोंपड़ी में बाल-बच्चों के साथ बड़ी मुश्किल से दिन काट रहा था।

इस तरह कुछ दिन बीत गए। एक रोज़ भोलाराम जङ्गल में लकड़ी काटने गया। वहाँ वह एक पेड़ से लकड़ी काट कर नीचे उतरा कि इतने में उसे पेड़ की जड़ में चींटियों का एक झुण्ड दिखाई दिया। उन सब चींटियों के मुँह में अनाज के दाने थे। यह देख कर भोलाराम को बहुत अचरज हुआ! उसने सोचा—"जो भगवान इस घने जङ्गल में रहने वाली चींटियों को दाना देकर पाल-पोस रहा है, वह मेरा पेट क्यों नहीं भरेगा? आज से मैं काम-धन्धा सब बन्द कर देता हूँ। देखता हूँ कि चींटियों को दाना देने वाला भगवान मेरे बाल-बच्चों का पेट भरता है कि नहीं।" यह कह कर वह घर गया और आसन लगा कर चुपचाप बैठ गया। घर में खाने के लिए कुछ न था। खरीदने के लिए पैसा भी न था। उसकी बीबी ने चिल्लाना शुरू कर दिया—"जाकर कहीं से कुछ कमा क्यों नहीं लाते?" लेकिन भोलाराम टस-से-मस नहीं हुआ। उसने कहा—"मैं क्यों कमाने जाऊँ? जो भगवान चींटियों को दाना देता है, वह हमें भूखा क्यों रखेगा?" बेचारी औरत क्या जवाब देती? लाचार हो वह उस दिन से खुद जङ्गल जाने लगी और जड़ी-बूटियाँ लाकर गाँव में बेचने लगी। यों किसी तरह कुछ दिन बीत गए।

भोलाराम की स्त्री एक दिन इसी तरह जङ्गल में जड़ी-बूटियाँ खोद रही थी कि अचानक उसकी खुरपी किसी कड़ी चीज से

कुमारी वनजा

लगी और खनखना उठी। यह देख बड़ी उतावली से उसने और खोदा। थोड़ी ही देर में एक कलसी निकल आई। उसमें अशर्फ़ियाँ भरी थीं। पहले तो उसने उसे जल्दी से उठा कर घर ले जाना चाहा। .लेकिन फिर झट उसे याद आ गया कि दिन में ले जाने से कलसी देख कर लोगों को शक हो जाएगा। बस, सब अशर्फ़ियाँ एक टोकरी में रख कर ऊपर से थोड़ी घास-फूस डाल कर उसने उसे कँटीले झाड़ों से ढक दिया और कुछ गोजर - बिच्छू लाकर उसमें छोड़ दिए जिससे किसी को उसमें हाथ लगाने का साहस न हो। फिर वह घर चली गई। धीरे धीरे अँधेरा हो गया और थोड़ी ही देर में रात के दस बज गए। तब भोलाराम की स्त्री ने अपने पति से जाकर कहा— "मुझे जङ्गल में आज एक अशर्फ़ियों से भरी कलसी मिली थी। मैं उन्हें टोकरी में भर कर एक जगह छिपा आई हूँ। चलो, टोकरी उठा लाएँ! कल से हमारी सारी ग़रीबी दूर हो जाएगी।" लेकिन भोलाराम वहाँ से न हिला, न डुला। उसने कहा— 'हम बेकार तकलीफ़ क्यों करें! चींटियों को दाना देने वाला भगवान खुद टोकरी हमारे घर ले आएगा।' उसकी पत्नी बहुत गिड़गिड़ाई। पर वह टस-से-मस न हुआ। रात गहरी हो गई थी। कुछ चोर बगल के घर में सेंध डाल रहे थे। इन दोनों की सारी बातचीत सुन कर

उन्होंने सोचा—"वाह! यह तो अच्छा मौका है! क्यों न जाकर अशर्फियाँ उठा लाएँ?" यह सोच कर लोभ से लपके हुए वे जङ्गल में पहुँचे। लेकिन टोकरी में हाथ डालते ही बिच्छुओं ने डङ्क मारा। "ओफ! ओफ! इस डाइन ने तो हमें भारी चकमा दिया! इसका बदला जरूर लेना चाहिए।" यह सोच कर उन्होंने बड़ी सावधानी से टोकरी उठाई और भोलाराम के घर दौड़े आए। छप्पर पर चढ़ कर उन्होंने एक बड़ा सूराख बना दिया। फिर उस छेद में से टोकरी उड़ेल दी। पहले तो टोकरी से जड़ी-बूटियाँ और गोजर-बिच्छू गिरे। लेकिन फिर झन-झन करती अशर्फियाँ आईं! यह देख कर पति-पत्नी अचरज से मुँह बाए रह गए। 'देखा? मेरा कहा ठीक निकला कि नहीं? चींटियों का भगवान अशर्फियाँ उठा लाया कि नहीं?' यह कह कर भोलाराम उठा और खुशी के मारे नाचने लगा।
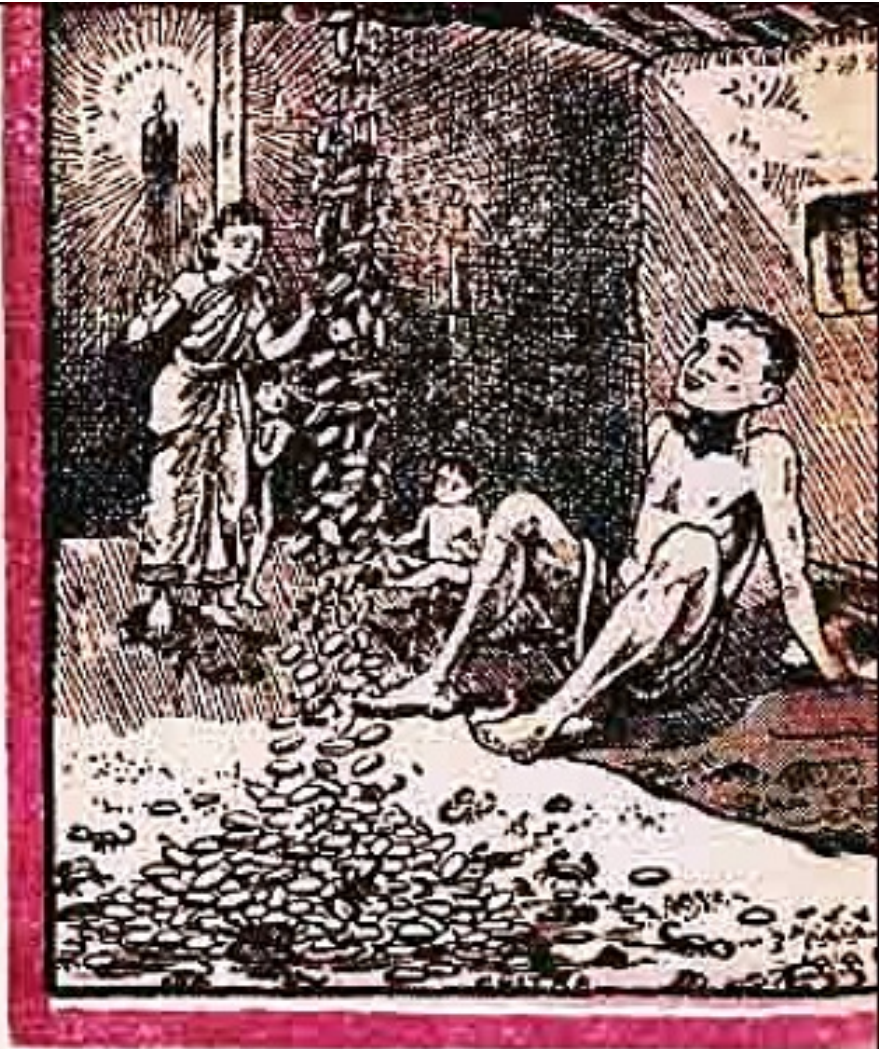
उसके बाद भोलाराम और उसके बीवी-बच्चे सभी सुख से दिन बिताने लगे। उन्हें अब रुपए-पैसे की क्या कमी थी?

बच्चो! यह कहानी पढ़ कर तुम भी चींटियों को दाना देने वाले भगवान पर भरोसा करके कहीं पढ़ना-लिखना न छोड़ देना! कम से कम भूख लगे तो अपनी माँ से खाना जरूर माँग लेना!

विदिशा नगर में एक दिन एक अभागे लड़के की मौत हो गई। उस बच्चे के माँ-बाप और उनके नातेदार उसको ढोकर गाँव के बाहर श्मशान में ले गए और उसे वहाँ एक जगह रख कर रोने-पीटने लगे। शाम का वक्त था और थोड़ी ही देर में अँधेरा होने वाला था।

उसी समय श्मशान का ही एक गिद्ध उस जगह आ उतरा और उस लाश को देख कर आँसू बहाने लगा—"हाय! कैसा सुन्दर लड़का है! इसे जमीन पर बेजान पड़ा देख कर मेरे ही आँसू रोके नहीं रुकते हैं। फिर उनकी क्या हालत होगी जिनकी आँखों का यह तारा रहा होगा? लेकिन रोने-पीटने से क्या फ़ायदा? जो चला गया वह थोड़े ही लौट आएगा? इसलिए दिल कड़ा करके तुम लोग यहाँ से चले जाओ। शाम हो रही है। यह मरघट गाँव से बहुत दूर है। अँधेरा होते ही यहाँ भूत-प्रेत, पिशाच आदि खुल कर खेलने लगते हैं। वे मुर्दों का तो कहना ही क्या; जिन्दों को भी खा जाते हैं।" उस गिद्ध ने बड़ी करुणा दिखाते हुए कहा।

उसकी बातें सुन कर लाश के साथ आए हुए लोगों को डर लगा। वे उस लाश को वहीं छोड़ कर लौट जाने लगे।

उनके क़दम अभी पीछे मुड़े ही थे कि एक गड्ढे में से एक सियार बाहर निकल आया और उनके सामने आकर बोला—"यह कैसी बात है? क्या आप लोग अभी से लौट कर चल दिए? इतनी जल्दी? अभी तो आपको आए एक घड़ी भी नहीं बीती! इस चाँद से लड़के को नंगी जमीन पर छोड़ कर चले जाने को आप लोगों का मन कैसे माना? आप लोग इतनी जल्दी निराश होकर चले जा रहे हैं। लेकिन आप

मदनकुमार

लोगों को क्या मालूम कि लड़का फिर नहीं जी उठेगा! घर जाकर करोगे क्या? यही रोना-धोना न? यहीं बैठ कर क्यों न रो-धो लो!" उसने कहा।

ये बातें सुनते ही उन लोगों के मन में फिर से आशा जग गई। कौन जाने, शायद लड़का फिर जी उठे? वे लोग वहीं रुक गए। यह देख कर गिद्ध फिर बोला—"क्या बकता है सियार! लाश में सड़ांस भी पैदा हो गई और तू कहता है कि लड़का फिर जी उठेगा? भला किसी ने सुना है कि कहीं मुर्दे भी जी उठते हैं? इस श्मशान में रहते मेरे बाल पक गए हैं। तुम लोग मेरी बात मानोगे कि इस सियार की? यह सियार तो कल का बच्चा है। अभी इसके दूध के दाँत भी नहीं टूटे हैं। श्मशान में बैठ कर रोने-पीटने से क्या फ़ायदा है? जाओ, घर जाओ! क्रिया-करम करो। ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा दो तो कुछ पुण्य हो और इस बेचारे की आत्मा को सुख मिले। यहाँ बैठे रहने से क्या फ़ायदा है? जाओ! जाओ!" यों उसने उन्हें वहाँ से खदेड़ना चाहा। उसकी बातें सुन कर वे लोग वहाँ से जाने लगे। लेकिन इतने में सियार फिर बोला—"गिद्ध की अक़्ल तो सठिया गई है। सिर्फ़ बाल पकने से ही किसी की बुद्धि भी नहीं पक जाती। आप लोग ज़रा सोचिए-विचारिए तो तुरन्त मालूम हो जायगा कि इसकी बातें झूठी हैं। यह कहता है कि मरे हुए लोग फिर नहीं जी उठते। लेकिन क्या सावित्री का पति सत्यवान मर कर फिर नहीं जी उठा था? क्या हरिश्चन्द्र की पत्नी शैव्या का बच्चा रोहितास साँप के डस लेने से मर कर फिर नहीं जी उठा था? कौन जाने, शायद उसी तरह यह लड़का भी फिर जी उठे? इसलिए आप लोग और थोड़ी देर तक यहीं रह जाइए। यह गिद्ध आप लोगों को भूत-प्रेत

का डर दिखाता है। लेकिन जानिए कि भूत-प्रेत साहसी मनुष्य का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अगर आप को डर लगे तो भगवान शङ्कर की प्रार्थना कीजिए। क्योंकि वे सभी भूतों के नाथ हैं। फिर भूत-प्रेत तो आपके पास फटकेंगे भी नहीं। वे औढर दानी भी हैं। आपके बच्चे को जिला देना उनके लिए कोई बड़ी बात नहीं है।" शोक में डूबे हुए लोगों की बुद्धि कुछ काम नहीं करती। लाश के साथ आए हुए लोगों की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए। गिद्ध की बात सुन कर वे लोग वहाँ से चले जाने की सोचते। लेकिन सियार की बातें सुन कर फिर रुक जाते। वे लोग यह भी नहीं जान पाए कि दोनों की बातों में कौन सा रहस्य छिपा हुआ है?

वास्तव में उस गिद्ध और सियार दोनों को लड़के के मर जाने का कोई सोच न था। वे झूठ-मूठ के आँसू बहाते हुए बड़ी करुणा दिखा रहे थे। लेकिन दोनों के मन में इस लाश को देख कर खुशी हो रही थी। क्योंकि लाशों को नोच खाने से ही गिद्ध और सियार की जीविका चलती है। इसी से वे दोनों लाश को देखते ही वहाँ आकर जमा हो गए थे। लेकिन सियार को देखते ही गिद्ध के मन में लालच पैदा हो गया कि वह किसी न किसी तरह उसे चकमा देकर सारी लाश वही हड़प जाए। इसके लिए यह जरूरी था कि लाश के साथ आए हुए लोग अँधेरा होने के पहले ही लाश को वहाँ छोड़ कर चले जाएँ। क्योंकि गिद्ध को सभी चिड़ियों की तरह दिन भर चारा ढूँढ़ कर अँधेरा होने के पहले ही घोंसले में पहुँच जाना था। इसीलिए गिद्ध उनको तुरन्त घर जाकर क्रिया-करम करने और दान-दक्षिणा देने की सलाह दे रहा था।

लेकिन सियार क्या कम चालाक था? वह और भी बड़ी बड़ी बातें बनाने लगा। उसने शास्त्रों और पुराणों का हवाला दिया और उन सब को भगवान शङ्कर की प्रार्थना करने को कहा। बात असल में यह थी कि अँधेरा हुए बिना सियार को उस लाश पर हाथ साफ़ करने का मौक़ा नहीं मिल सकता था। अगर रिश्तेदार लोग इसी बीच लाश को वहाँ छोड़ कर जाते तो गिद्ध उसे तुरन्त हड़प जाता और फिर उसके लिए कुछ नहीं बच रहता। लेकिन अँधेरा होने तक अगर वह रिश्तेदारों को वहीं रोक रखे तो फिर गिद्ध को निराश होकर चले जाना पड़ेगा और बाजी उसी की होगी। कुछ देर बाद रिश्तेदार भी ऊब कर घर चले जाएँगे। फिर तो उसे मन-चाहा मौक़ा मिल जाएगा।

इस तरह गिद्ध और सियार दोनों अपनी अपनी चतुराई दिखा कर किसी न किसी तरह पेट की आग बुझाने का उपाय कर रहे थे। इतने में अँधेरा होने लगा। लड़के के भाई-बन्धु लाचार होकर सियार के कहे अनुसार करुण-स्वर से शिवजी की प्रार्थना करने लगे।

'वन्दे शम्भुम् उमापतिम्, सुरगुरुम्
वन्दे जगत्कारणम्, वन्दे पन्नगभूषणम्'
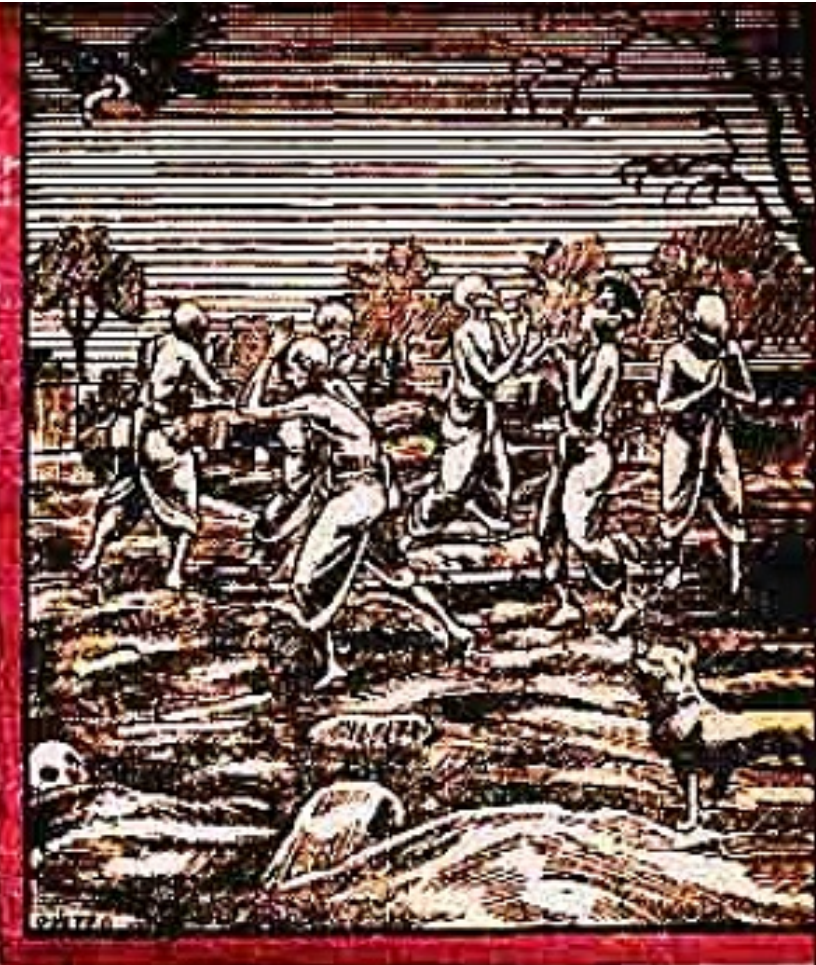
अब गिद्ध पूरी तरह निराश हो गया था। उसने निश्चय कर लिया कि अन्धेरा भी हो चला है और रिश्तेदार लोग यहाँ से टलने वाले नहीं। वह मन ही मन सियार को कोसता हुआ वहाँ से उड़ने की तैयारी करने लगा। लेकिन इतने में अन्धेरा हो जाने के कारण भगवान महादेव अपने भूत-प्रेतों के साथ श्मशान की सैर करने आए। उन्हें उस लड़के के रिश्तेदारों की प्रार्थना का स्वर सुनाई पड़ा। उन्होंने तुरन्त उनके सामने प्रत्यक्ष होकर कहा—"तुम लोग कौन हो और किसलिए मेरी प्रार्थना कर रहे हो?"

तब उन लोगों ने आनन्द से भर कर अपनी कहानी सुनाई और कहा—"हम पर कृपा करके इस लड़के को जिलइए।" भगवान ने 'तथास्तु' कह दिया। तुरन्त वह लड़का जम्हाई लेता हुआ उठ बैठा जैसे अभी नींद से जगा हो। वह कहने लगा—"अरे! मैं इस श्मशान में कैसे आ गया?"

गिद्ध ने जाते जाते यह सब देखा तो वह जहाँ का तहाँ ठिठका रह गया। इधर सियार जो मन ही मन फूला न समा रहा था कि अब समूची लाश उसे ही मिलेगी लड़के को फिर जी उठते देख कर पत्थर की तरह खड़ा रह गया। अपने मन की जलन निकालने के लिए वह महादेव को कोसने लगा। यह देख कर लड़के के रिश्तेदारों को बहुत अचरज हुआ। उन्होंने कहा—"अरे! यह कैसी बात है? तुम्हारी ही सलाह तो थी कि हम भगवान महादेव की प्रार्थना करें? हमारी प्रार्थना सुन कर उन्होंने लड़के को जिलाया। अब तुम उन्हें क्यों कोसने लगे हो?" तब सियार ने रिरिया कर जवाब दिया—"तुम्हारा लड़का जीता या न जीता! मुझे क्या पड़ी थी? मैं तो इसलिए खुश हो रहा था कि आज मुझे एक लाश खाने को मिली। लो, इतने में दौड़े आए बड़े देवता कहीं के! और लड़के को जिला कर मेरे मुँह का कौर छीन लिया।" यह सुन कर गिद्ध ने नीचे उतर कर सारी राम-कहानी सुनाई और कहा—"भगवान! आपने यह अच्छा ही किया। यह मेरे मुँह का कौर छीनना चाहता था। आपने इसके मुँह का कौर छीन लिया।"

तब भगवान ने सोचा कि ये दोनों बेचारे अपनी भूख मिटाने के लिए तो यह सब कर रहे थे! उन्होंने उन पर तरस खाकर ऐसा वर दिया जिससे फिर दोनों को कभी भूख-प्यास न सताए। रिश्तेदार लोग भी लड़के को साथ लेकर अपने भाग्य पर फूले हुए घर लौट गए।

एक जङ्गल में एक बाघ-बाघिन और दो खरगोश आस-पड़ोस में रहते थे। ये दोनों जोड़े आपस में बड़े मेल-जोल से रहते थे। इनकी दोस्ती देख कर जङ्गल के सभी जीव अचरज करते थे। क्योंकि जैसा तुम जानते हो, बाघ माँसाहारी जीव है और जंगल में उसको देख कर सभी मृग डरते हैं। अगर कोई भूला-भटका जानवर उसके सामने आ गया तो समझो कि उसकी मौत ही उसे उधर ले आई। बाघ के सामने होकर कोई भी जानवर जिंदा नहीं लौट सकता। वह जितना खूँखार है उतना ही फुर्तीला भी। ऐसे बाघ में और खरगोश में गाढ़ी दोस्ती देख कर जंगल के जानवरों को अचरज न हो तो और क्या हो! कुछ के मन में तो डाह भी पैदा हो गई थी।

ये दोनों जोडे दो झोंपड़ियों में रहते थे। बरसात का मौसम आता तो झोंपड़ियाँ चूने लगतीं। इससे इनको बड़ी तकलीफ़ होती थी। इसलिए इन दोनों ने निश्चय किया कि घास-फूस काट लाएँ और झोपड़ियाँ छा लें। नहीं तो बरसात के दिनों में सोने की जगह भी नहीं रहेगी।

दूसरे दिन बाघ और खरगोश घास-फूस ढूँढने के लिए मुँह-अन्धेरे घर से चल दिए।

बाघ को चने का सत्तू बहुत पसन्द था। खरगोश से उसकी गहरी दोस्ती थी ही। इसलिए खरगोश को भी सत्तू पसन्द था। इसलिए जब बाघिन ने सत्तू बाँध दिया तो खरगोशिन ने भी सत्तू बाँध दिया।

कलेवे की पोटलियाँ कन्धे पर लटकाए लम्बी मूठ वाले हँसिए हाथों में लेकर बाघ

दीनानाथ शर्मा

महाशय भूखों न मरें तो क्या करें? बच्चो! जानते हो बाघिन ने दूसरे दिन क्या किया? उसने कलेवे की पोटली में तीन चार पत्थर बाँध दिए और बड़े प्रेम से पति के हाथ में पोटली थमा दी। वह बेचारा क्या जाने कि उसकी पोटली में कलेवा नहीं; बल्कि पत्थर बँधे हुए थे? उसे अपनी घर वाली की प्रतिज्ञा बिल्कुल याद न थी। उस बेचारे को तो खुशी हो रही थी कि बीबी से उसकी सुलह हो गई। नहीं तो वह सवेरे सवेरे उठ कर कलेवा बना कर उसके हाथ क्यों दे देती? इसलिए बाघ ने सोचा कि उसकी बीबी ने कल के झगड़े की बात मन से बिल्कुल भुला दी है। उसने सोचा–'वाह! इसका दिल कैसा साफ़ है!' बाघ खुशी खुशी जङ्गल की तरफ चला गया।

बड़ी तेज धूप थी। दोपहर होते होते बाघ के पेट में चूहे दौड़ने लगे। बेचारा कलेवे की पोटली लेकर एक पेड़ की छाँह में खाने बैठा। पोटली खोली तो मुँह बाए खड़ा रह गया। वह अब क्या करे? भूख के

और खरगोश साहब एक अच्छी साइत में घास काटने चले। शाम तक मेहनत करके घास के दो बड़े बड़े गट्ठे सिर पर रख कर वे दोनों घर लौट आए।

इस तरह दो तीन दिन बीत गए। लेकिन बड़ों ने कहा है न? 'सबै दिन जात न एक समान।' यहाँ भी वही हाल हुआ। एक दिन बाघ और बाघिन में झगड़ा हो गया। बाघिन को अपने पति पर बड़ा गुस्सा आया। उसने तैश में आकर कहा—'अगर मैंने तुमको भूखों न मार दिया तो मेरा नाम न लेना!' जब घर-वाली रूठ जाय तो पति

मारे बेहाल था। खरगोश का कहीं पता न था। बस, उसने झट खरगोश की पोटली खोली। खाने की चीज़ें निकाल कर पत्थर उसमें रख दिए। फिर थोड़ी दूर जाकर बैठ गया जैसे वह कुछ भी जानता ही न हो।

थोड़ी देर बाद थका-माँदा भूखा-प्यासा खरगोश कलेवा करने आया। बेचारे ने जल्दी जल्दी पोटली खोली।

लेकिन पोटली में पत्थरों के सिवा और कुछ न था। खरगोश ने नजदीक के एक तालाब में जाकर पानी पीकर प्यास बुझाई। बेचारे की निराशा का ठिकाना न रहा। सबेरे से उसने कुछ खाया-पीया न था। भूख बड़े जोर से लग रही थी। अन्तड़ियाँ कुलबुला रही थीं। तिस पर आज उसने मेहनत भी खूब की थी। लपका लपका खाने के लिए आया। लेकिन कलेवे के बदले पत्थर! यह कैसे मुमकिन हुआ? शायद उसकी पत्नी की भूल हो! लेकिन उसकी पत्नी ने तो कभी ऐसा न किया था। वास्तव में उसकी जैसी अच्छी स्त्री कहीं न थी। फिर यह कैसे हुआ? क्या किसी ने कलेवा चुरा कर उसके बदले पत्थर रख दिए? लेकिन नजदीक में उसके प्यारे दोस्त बाघ के सिवा और कोई न था। बाघ तो ऐसा कभी न करेगा। शायद उसकी बीवी ने मजाक के तौर पर ऐसा किया हो। लेकिन ऐसा मजाक तो ठीक नहीं! इस तरह खरगोश इस सोच में पड़ गया कि पोटली में कलेवे के बदले पत्थर कहाँ से आ गए?

जब साँझ हुई तो गुस्से से भरा खरगोश घर लौटा। दरवाजे पर पाँव धरते ही उसने पत्नी को बुला कर पूछा—"क्यों री! क्या

तेरी अक्ल मारी गई जो तूने कलेवे की पोटली में पत्थर बाँध दिए थे? तू ने सोचा नहीं कि मैं खाऊँगा क्या? निगोड़ी कहीं की! यह भी कोई दिल्लगी है? याद रख! ऐसा फिर कभी किया तो तेरी हड्डी-पसली चूर-चूर कर दूँगा!" उसने दाँत पीस कर कहा। खरगोशिन को जैसे काठ मार दिया हो। 'दैया रे दैया! कहते क्या हो? पत्थर बाँध दिए? मैंने तो पोटली में रोज़ की तरह सत्तू बाँध दिया था। उस में पत्थर कहाँ से आ गए? यह भी कभी हो सकता है?' उसने खिसिया कर कहा। आखिर दोनों में सुलह हुई और खा-पी कर दोनों सो गए।

दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। बाघिन ने फिर पत्थर बाँध दिए। लेकिन बाघ की क्या मजाल थी कि जो पत्नी से कुछ कहे? उसने उस दिन भी अपने दोस्त की पोटली साफ़ कर दी। भोला-भाला खरगोश शाम को फिर खरगोशिन पर बिगड़ा। उसे घर से निकल जाने को कहा। आखिर खरगोशिन ने बड़ी बड़ी कसमें खाकर अपने पति से कहा—"सुनो तो! जान पड़ता है, कोई बदमाश यह शरारत कर रहा है। अगर विश्वास न हो तो कल दोपहर को छिप कर देख लेना। फिर आसानी से चोर पकड़ा जाएगा। तब उसकी खूब खबर लेना। बेकार मुझ पर क्यों बिगड़ते हो?" खरगोश को यह बात जँच गई। दूसरे दिन खरगोशिन ने कलेवे की पोटली उसकी आँखों के सामने बाँधी।

उस दिन खरगोश का सारा ध्यान उस पोटली पर लगा रहा। काम करने में मन न

लगा। वह किसी न किसी तरह चोर को पकड़ना चाहता था। उसने पोटली रोज की तरह एक जगह रख दी और काम का बहाना करके चला गया। जब दोपहर हुई तो नजदीक की झाड़ी में छिप कर देखने लगा। थोड़ी ही देर में बाघ आया और उसकी पोटली खोल कर जल्दी जल्दी खाने लगा। अब खरगोश की समझ में आ गया कि उसकी पोटली में से कलेवा रोज़ कैसे ग़ायब हो जाता था? उसने सोचा—"तो यह सब मेरे दोस्त की करामात थी? और मैं बेकार अपनी स्त्री पर बिगड़ रहा था!"

बाघ पोटली साफ करके चला गया। खरगोश चुपचाप देखता रहा। उस दिन भी वह तालाब का पानी पीकर रह गया। शाम को दोनों मित्र घर लौटने की तैयारी करने लगे। आज खरगोश ने जरा बड़ा गट्ठा बाँधा। दोनों अपना अपना गट्ठा उठाने लगे। इतने में बाघ ने पूछा—"क्यों दोस्त? आज तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं मालूम होती है? क्या गट्ठा तुम से उठ नहीं रहा है?"

"क्या कहूँ, भाई! बुखार चढ़ गया है! इसी से सोच में पड़ा हूँ कि घर कैसे पहुँचूँ?" खरगोश ने कहा।

बाघ को उस पर तरस आ गया। उसने कहा—"अच्छा, तो तुम अपना गट्ठा भी मेरी पीठ पर लाद दो और उस पर तुम भी बैठ जाओ। मैं आसानी से तुम को घर पहुँचा दूँगा।"

"भई! सचमुच तुम्हारे जैसा दोस्त मिलना मुश्किल है। सच्चा दोस्त तो सिर्फ़ तुम्हीं को कह सकते हैं। मैं तुम्हारा एहसान तो जन्म जन्म में न भूल सकूँगा।" खरगोश

ने जवाब दिया। उसने हाँफते-कराहते अपना गट्ठा बाघ की पीठ पर रख दिया और खुद उस पर आराम से बैठ गया।

धीरे धीरे वे दोनों गाँव के नजदीक पहुँचे। वहीं पास में एक मरघट था। उस समय वहाँ एक चिता जल रही थी। खरगोश चुपके से बाघ की पीठ पर से उतर गया और उस चिता में से एक जलती हुई लकड़ी उठा लाया। उसने उससे बाघ की पीठ पर रखी हुई घास में आग लगा दी। सूखी घास-फूस थी। आग बड़ी जल्दी भभक उठी। उस बाघ बेचारे का सारा शरीर जल गया। गट्ठे उसकी पीठ पर मजबूती से बँधे हुए थे। इसलिए वह उन्हें गिरा भी न सकता था। तब खरगोश ने व्यङ्ग से कहा—"बाघ भैया! अब तो कभी अपने दोस्तों को धोखा न दोगे? मेरी बात याद रखोगे न?" यह कह कर वह नौ-दो-ग्यारह हो गया। बच्चो! मैं तुमसे एक बात कहना भूल ही गया। पहले बाघ के बदन पर धारियाँ नहीं होती थीं। जब उसने चोरी की और अपने दोस्त को धोखा दिया तो उसे उसका फल भुगतना पड़ा। उसके बदन पर जहाँ जहाँ जलती हुई घास चिपकी रही वहाँ-वहाँ उसका शरीर जल गया। कुछ दिनों के बाद घाव तो अच्छे हो गए। लेकिन दाग़ रह गए। बाघ के बदन पर वे धारियाँ नहीं; बल्कि उसके कलङ्क की कालिमा हैं।

एक आदमी के पाप से सारी जाति का नाश हो जाता है। उसी तरह एक बाघ के कलङ्क की कालिमा सभी बाघों के शरीर पर प्रगट हो गई। अगर वे धब्बे न होते तो बाघ का बदन कैसा सुनहला और सुन्दर होता, सोचो तो!

इसलिए चाहे पशु हों चाहे मनुष्य, हरेक को यह कोशिश करनी चाहिए कि उस पर कोई कलङ्क न लगने पाए। एक बार कलङ्क लगने पर फिर उसको धो डालना मुश्किल हो जाता है।

पेटू बिल्ली

किसी जमाने में एक बिल्ली रहती थी। एक तोताराम से उस की बड़ी दोस्ती थी। एक दिन बिल्ली ने अपने दोस्त तोताराम को दावत के लिए बुलाया। लेकिन वह थी बड़ी कंजूस। इसलिए उसने तोते को सिर्फ थोड़ा-सा सत्तू और पतला-सा पानी मिला हुआ दूध दिया। बेचारा तोताराम बड़ा शरीफ़ था। इसलिए वह कुछ भी नहीं कह सका।

कुछ दिन बाद तोते की बारी आई। तब उसने बड़ी धूम-धाम के साथ इस दावत की तैयारी की। उस ने पाँच सौ लड्डू, एक हज़ार रोटियाँ और पाँच घड़ों में भर कर खीर तैयार की। फिर बिल्ली को बुला लाया।

खीर देखते ही बिल्ली फूली न समाई। उस के मुँह से लार टपकने लगी। तोते ने अपने लिए दो लड्डू अलग रख लिए और बाकी सभी चीज़ें बिल्ली के सामने रख दीं। बिल्ली दोनों हाथों लड्डू उठा कर मुँह में ठूँसने लगी। एक एक लड्डू उसके लिए एक एक कौर बन जाता था। चबाने के लिए समय ही कहाँ था? बस, जल्दी जल्दी निगलती जाती थी। इस तरह एक एक कर सब लड्डू खतम हो गए। रोटियाँ भी ग़ायब हो गईं और खीर के घड़े भी खाली हो गए।

"पेट तो भरा नहीं! क्या और कुछ बचा है?" बिल्ली ओठ चाटती हुई बोली।

तोते ने दोनों लड्डू जो अपने लिए बचा कर रख लिए थे, लाकर बिल्ली की थाली में डाल दिए और कहा—'बस, इन दोनों लड्डुओं के सिवा और कुछ नहीं बचा है।'

बिल्ली ने दोनों लड्डू एक ही बार मुँह में ठूँस लिए और एक ही कौर में निगल कर बोली—'लेकिन मेरा पेट तो भरा नहीं! क्या खाने के लिए और कुछ नहीं बचा है?'

तोते ने झुँझला कर कहा—'जो कुछ था सो सब तुम्हीं निगल गईं। अब और

गोकुलचन्द

क्या बचा है ? हाँ, सिर्फ मैं बच रहा हूँ। चाहो तो मुझे भी निगल जाओ!'

तोते के यह कहने की देरी थी कि बिल्ली उस पर झपट पड़ी और उसको पकड़ कर झट से निगल गई। फिर बाहर निकल कर सड़क पर आ गई। वहाँ एक बुढ़िया खड़ी खड़ी इस बिल्ली के काले कारनामे अपनी आँखों देख रही थी। उस ने बिल्ली को रोक कर कहा—'निगोड़ी कहीं की! क्या तुझे इतना भी न सूझा कि वह तुम्हारा दोस्त था ?'

'चली है बड़ा उपदेश देने! देख! अभी तेरी क्या गत बनाती हूँ ?' यह कह कर बिल्ली ने बुढ़िया को भी पकड़ लिया और झट से मुँह में डाल कर निगल गई।

वह फिर खुशी-खुशी आगे बढ़ी तो उसे एक धोबी एक गधे को हाँकता हुआ मिला।

'क्यों री बिल्ली! अन्धी है क्या ? गधे की टाँग के नीचे पड़ कर दब जाएगी तो बस, भुरता ही निकल जाएगा। हट जा, हट जा, सामने से!' धोबी ने कहा।

'वाह रे! वाह! आँखें सिर पर चढ़ गई हैं क्या ? क्या समझ रखा है तू ने मुझे ! पाँच सौ लड्डू और एक हज़ार रोटियाँ चट कर गई। पाँच घड़े खीर एक घूँट में पी गई। तोतेराम को निगल गई। एक बुढ़िया ने टोका तो उस को हड़प कर गई। तू कहाँ से आया है मुझे आँख दिखाने ? देख, अभी तेरा क्या हाल करती हूँ ?' यह कह कर बिल्ली गधे और

धोबी दोनों को पलक मारते-मारते हड़प गई और फिर आगे बढ़ चली।

थोड़ी दूर पर बिल्ली को एक जुलूस सा आता दिखाई दिया। कल ही वहाँ के राजकुमार की शादी हुई थी। इसलिए बड़ी धूमधाम से जुलूस निकल रहा था। आगे-आगे बाजे-गाजे वाले चल रहे थे। उन के पीछे सारे दरबारी लोग एक कतार में चल रहे थे। सब के पीछे एक सौ हाथी झूमते चले आ रहे थे। बिल्ली सीधे इस जुलूस के सामने से जाने लगी।

"क्या री बिल्लैया! तेरी आँखें आसमान पर चढ़ गई हैं! हाथी के पैरों तले पड़ जाएगी तो चटनी बन जाएगी। हट जा! हट जा!

नहीं तो नाहक़ जान गँवाएगी!" किसी दरबारी ने कहा।

'अच्छा, देखूँ, किस की चटनी बनती है! क्या समझ रखा है तूने मुझे? पाँच सौ लड्डू और एक हज़ार रोटियाँ चट कर गई। पाँच घड़े खीर एक घूँट में पी गई। अपने दोस्त तोते को निगल गई। एक बुढ़िया ने टोका तो उसे भी हड़प कर गई। बेवक़ूफ़ धोबी जो सामने आया तो उसे और उसके गधे को भी निगल गई। क्या तू समझता है कि मैं तेरे राजा-रानी, उनके बाजे वालों और हाथियों की कोई परवाह करती हूँ? देख ले अभी!' यह कह कर बिल्ली सारे जुलूस को मय हाथियों के निगल गई और आगे बढ़ी।

अब तक बिल्ली का पेट भर गया था। लेकिन उसे ऐसा मालूम होता था मानों उस के भोजन में कोई कमी रह गई है। थोड़ी देर बाद बिल्ली को याद आया कि आज सवेरे से उस ने एक भी चूहा नहीं खाया है। उस ने सोचा–'ओह! तो बात यह है!'

वह मन-ही-मन यह सब सोच रही थी कि एक चूहा उस के सामने आकर खड़ा हो गया और बड़ी शान के साथ बोलने लगा—'ऐ बिल्ली! हट जा! हट जा, मेरे सामने से! क्या तेरी शामत आ गई जो इस तरह मेरी राह रोक कर खड़ी हो गई है?' बिल्ली फूली न समाई। उसे मुँह-माँगी मुराद मिल गई। उस ने पलक मारते में चूहे को पकड़ा और मुँह में डाल कर बिना चबाए निगल गई। यह तो ऊँट के मुँह में जीरे का फोरन था।

बिल्ली के पेट के अन्दर बड़ा अन्धेरा था। हाथ को हाथ न सूझता था। लेकिन आखिर वह चूहा था न! उसी अन्धेरे में उस ने लड्डुओं, तोते, बुढ़िया, धोबी, गधे, राजा-रानी, दरबारियों, बाजे-वालों, और हाथियों सबको देख लिया। इन सबसे बिल्ली का पेट खचाखच भरा मालूम हो रहा था। वहाँ हवा की कमी से उस का दम घुटा जा रहा था। फिर वह वहाँ कैसे रुकता! उस ने अपने पैने दाँतों से बिल्ली के पेट में एक बड़ा छेद कर दिया और बाहर निकल आया। उसी के पीछे पीछे चोंच में दो लड्डू दबाए तोताराम भी बाहर आ गया। तोते के पीछे-पीछे बुढ़िया, उस के पीछे धोबी, उस के पीछे गधा और उस के पीछे राजा और रानी का सारा जुलूस बाहर निकल आया।

अब बेचारी बिल्ली क्या करती! अपना पेट सिलवाने के लिए वह किसी दर्जी को ढूँढ़ने चली गई।

वचन-पालन

बीते युग की बात है। एक नगर में एक व्यापारी रहता था। उसके इकलौते बेटे का नाम था प्रभाकर। व्यापारी के पास दो बड़े जहाज थे। उन्हीं के जरिए व्यापार करके उसने लाखों कमाए।

एक बार व्यापारी के दोनों जहाज माल लाद कर विदेश गए। लेकिन बहुत दिन बीत जाने पर भी जब जहाज नहीं लौटे तब उसके मन में गहरी चिन्ता पैदा हुई। वह बहुत अधीरता से उनकी राह देखने लगा। आख़िर उसे खबर लगी कि उसके जहाज़ तूफान में डूब गए। व्यापारी के सिर पर मानों बिजली गिरी। वह माथा पकड़ कर जमीन पर बैठ गया।

कुछ देर बाद उसने सिर उठाया तो देखा कि एक बौना उसके सामने खड़ा ठठा कर हँस कर कह रहा है—"सेठजी! बेकार सोच क्यों करते हो? अब रोने-पीटने से क्या होने वाला है! फिर भी अगर तुम एक वचन दो तो मैं तुम्हारी मदद कर दूँ। आज शाम को घर लौटते ही सब से पहले जिस चीज़ पर तुम्हारी नजर पड़े वह मुझे दे दो। अगर तुम मुझे यह वचन दो तो मैं तुम्हारी खोई हुई दौलत फिर तुम्हें वापस दिला सकता हूँ। जो चीज़ मुझे देनी पड़ेगी वह बारह साल के अंदर जब तुम्हारा मन चाहे दे सकते हो।"

यह सुन कर व्यापारी ने अपने मन में सोचा—"मेरे घर लौटने पर सबसे पहले जो दौड़ कर मेरे पैरों से चिपट जाता है वह है मेरा कुत्ता। इसलिए सारी दौलत के बदले बौने को एक कुत्ता देकर मैं छुटकारा पा सकता हूँ।" यह सोच कर उसने बौने की शर्त मंजूर कर ली। बौना जैसे आया था वैसे ही ग़ायब हो गया।

व्यापारी शाम को घर लौटा। चौखट पर पाँव रख ही रहा था कि उसका लाड़ला

श्रीनिवास शर्मा
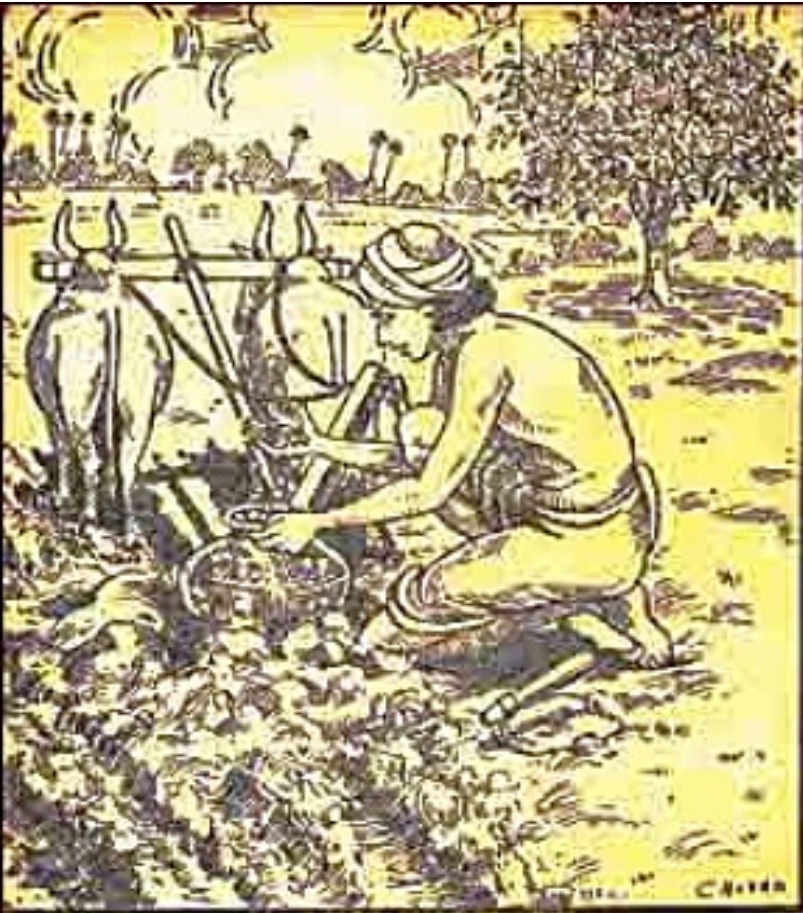
लड़का प्रभाकर दौड़ कर उससे लिपट गया। यह देख कर व्यापारी को एक बड़ा धक्का लगा। लेकिन बेचारा करता क्या? बात जो हार चुका था! आख़िर उसने यह सोच कर सन्तोष कर लिया कि उस के लिए अभी बारह वर्ष का समय है। एक दिन व्यापारी खेत जोतवा रहा था कि उसके हल की फाल किसी कड़ी चीज़ से टकराई। वहाँ खोदने पर उसे अशर्फियों से भरा हुआ एक घड़ा मिला। व्यापारी ने समझा कि यह उसी बौने का प्रभाव है। उस पूँजी से व्यापार करके एक दो बरस में वह फिर लखपती बन गया।

देखते देखते बारह बरस बीत गए। बौने की दी हुई अवधि पूरी हो गई। तब व्यापारी ने अपने लड़के प्रभाकर को बुला कर सारा किस्सा कह सुनाया। सुन कर प्रभाकर ने कहा—"अच्छा, देखूँगा कि वह बौना हमारा क्या बिगाड़ सकता है! बच्चे को ऐसा चपेटूँगा कि छठी का दूध याद आ जाएगा। आप कुछ फ़िक्र न कीजिए!" थोड़ी देर में बौना आ ही गया। उसने व्यापारी से कहा—"क्यों सेठजी! तुमने मुझे जो वचन दिया था वह पूरा करोगे कि नहीं?" उसका इतना कहना था कि प्रभाकर उस पर टूट पड़ा और उसे मार-पीट कर भगाने की कोशिश करने लगा।

लेकिन वह कोई मामूली बौना नहीं था। वह पल भर में प्रभाकर को कैद करके ले गया। प्रभाकर की गुस्ताख़ी की सजा देने के लिए उसने उसे एक छोटी सी नाव पर चढ़ा कर समुन्दर में छोड़ दिया। प्रभाकर की नाव बहते बहते एक सुनसान किनारे से जा लगी। वह नाव से उतर कर जब थोड़ी दूर चला तो उसे

एक सोने के पहाड़ पर एक सोने का क़िला दिखाई दिया। उस क़िले में दैत्य लोग रहते थे।

प्रभाकर उस क़िले में घुसा और वहाँ एक महल देख कर उसमें चला गया। एक कमरे में उसे एक काला साँप दिखाई दिया। उस साँप ने उससे कहा—"डरो मत! मैं एक देव-कन्या हूँ। दैत्य लोग मुझे उठा कर ले आए और मुझे एक काला साँप बना दिया। अगर तुम एक उपाय करो तो मुझे इस शाप से छुटकारा मिल सकता है। तुम्हारे इस उपकार के लिए मैं जन्म भर तुम्हारी दासी बनी रहूँगी और किसी न किसी तरह इस उपकार का बदला ज़रूर चुका दूँगी।" प्रभाकर ने उसकी बात मन्जूर कर ली। तब उसने कहा—'प्रभाकर! आधी रात होते ही काले बौने दैत्य तुम्हें खोजते हुए आएँगे और पूछेंगे—'तुम यहाँ क्यों आए?' तब तुम कहना—'मैं देव-कन्या को लेने आया हूँ।' फिर वे पूछेंगे—'क्या तुम उसके लिए अपनी जान देने को तैयार हो?' तब तुम 'हाँ' कर देना। तुरन्त वे तुम्हारी जान ले लेंगे। परन्तु डरने की कोई बात नहीं। तुम्हारे मरते ही मैं इस जादू से छूट जाऊँगी और फिर तुम्हें जिला लूँगी।' देव-कन्या ने जैसा कहा, वैसा ही हुआ। आख़िर देव-कन्या ने अपना असली रूप धारण करके प्रभाकर को जिला लिया। इस तरह बौनों से उनका पिण्ड छूट गया।

तब प्रभाकर ने उस देव-कन्या से शादी कर ली और दोनों उसी पहाड़ पर, उसी क़िले में रहने लगे। कुछ ही दिनों में उनके एक सुन्दर लड़का पैदा हुआ।

दो साल बाद प्रभाकर ने अपनी स्त्री से कहा—"मैं एक बार अपने माँ-बाप को

देख आना चाहता हूँ।" लेकिन उसने कबूल न किया। पर प्रभाकर के बहुत हठ करने पर उसने कहा—"अच्छा, तो जाओ! मैं एक अँगूठी देती हूँ। उसे उँगली में पहन लो। उसके प्रभाव से ज्यों ही तुम मुझे याद करोगे, मैं तुम्हारे आगे आ खड़ी हूँगी। लेकिन याद रखो! अपने पिता के सामने मुझे कभी याद न करना।" यह कह कर उसने एक अँगूठी अपने पति की उँगली में पहना दी।

प्रभाकर ने वह अँगूठी पहन कर आँखें मूँद लीं और कहा—"मैं अपने पिता के पास जाना चाहता हूँ।" उसने आँख खोली

तो अपने को पिता के घर में खड़ा पाया। लेकिन उसे अपना घर छोड़े बहुत दिन हो गए थे। उसका रूप भी बिलकुल बदल गया था। इसलिए उसके माता-पिता उसे पहचान नहीं सके। यह देख कर प्रभाकर को बड़ा दुख हुआ। उसने शुरू से अपनी सारी कहानी उन्हें सुनाई। तो भी उन्हें उस पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने समझा कि वह कोई धोखे-बाज है। प्रभाकर ने बहुत सी निशानियाँ दिखाईं; तो भी उन्हें उस पर विश्वास न हुआ।

आखिर प्रभाकर को गुस्सा आ गया। उसने साबित करना चाहा कि वह झूठा नहीं है। इसलिए उसने मन में अपनी स्त्री को याद किया। तुरन्त वह बेटे को अपनी गोद में लिए आ खड़ी हुई। अब प्रभाकर के माँ-बाप को विश्वास हुआ। वे बहू और पोते को देख कर बहुत खुश हुए। लेकिन देव-कन्या को मन ही मन अपने पति पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। वह सोच रही थी कि इसने अपना वचन तोड़ डाला।

एक दिन पति-पत्नी दोनों नदी के किनारे टहल रहे थे। इतने में प्रभाकर को नींद आ गई और वह एक पेड़ के नीचे सो गया। बस, देव-कन्या को मौका मिला। उसने पति के हाथ से अँगूठी निकाल ली और अपने बेटे को लेकर एक क्षण में फिर अपने सोने के क़िले में लौट गई।

थोड़ी देर बाद प्रभाकर की नींद खुली तो उसे सारा हाल मालूम हुआ। लेकिन अब वह क्या कर सकता था? घूमते-फिरते वहाँ से चल कर एक पहाड़ के पास पहुँचा। वहाँ तीन दैत्य आपस में झगड़ रहे थे। प्रभाकर को देखते ही तीनों ने उसे बुलाया और फैसला करने को कहा। प्रभाकर पञ्च बना। तब वे कहने लगे—"देखो भई! हमारे पास एक जोड़ी खड़ाऊँ है। इसको पहन कर आदमी जहाँ चाहे वहाँ जा सकता है। मोतियों की एक माला है। इसको गले में डाल लेने से आदमी जिस चीज़ की इच्छा करे वह उसे तुरन्त मिल सकती है। एक तलवार है। यह ऐसी है जिसके बल से सारे संसार को जीता जा सकता है। हम तीनों इन चीज़ों को आपस में बाँट लेना चाहते हैं। अब तुम फैसला करो कि किसको कौन सी चीज़ मिले?" उन्होंने कहा।

प्रभाकर ने कहा—"ठीक है! मैं फैसला तो कर सकता हूँ। लेकिन मुझे कैसे मालूम हो कि इन चीज़ों में ये सब गुण हैं? इसलिए मैं एक बार इनकी जाँच करना चाहता हूँ।" तीनों दैत्य राजी हो गए। प्रभाकर ने पहले वह माला गले में डाल ली। फिर तलवार हाथ में पकड़ी और खड़ाऊँ पहन कर उसने मन

ही मन कहा—"मैं सोने के क़िले में पहुँच जाऊँ।" बस, पलक मारते मारते वह सोने के क़िले में पहुँच गया।

वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि बड़ी धूम-धाम से किसी के स्वयंवर की तैयारियाँ हो रही हैं। पूछने पर पता चला कि यह उसी देव-कन्या का स्वयंवर है। इसलिए देश-देश के राजा आए हुए थे। प्रभाकर तुरन्त देव-कन्या के सामने जा खड़ा हुआ। अपने पति को आया देख कर वह अवाक रह गई। फिर दोनों हाथों से आँखें मूँद कर रोने लगी। प्रभाकर ने तब उसको धीरज देते हुए कहा—'रोओ मत! मैं तुमसे कुछ नहीं कहता। मेरे पिता ने बौने को वचन देकर तोड़ा। क्योंकि उन्हें मुझ से बड़ा प्रेम था। मैंने भी तुम्हें वचन देकर तोड़ा। क्योंकि मुझे अपने माँ-बाप से बड़ा प्रेम था। लेकिन तुमने अपना वचन क्यों तोड़ा, यह मेरी समझ में नहीं आया।'

तब देव-कन्या ने अपनी ग़लती महसूस की और सिर झुका कर माफी माँगी। तुरन्त स्वयंवर रुक गया और सभी राजकुमार हताश होकर अपने अपने देश लौट गए।

उस दिन से प्रभाकर और देव-कन्या उस सोने के क़िले में बड़े सुख से रहने लगे।

बहुत से लोग वचन देकर यों ही तोड़ देते हैं। लेकिन यह बड़ी भूल है। क्योंकि 'आदमी के गात में बात ही करामात है!' बच्चो! देखा तुमने? वचन तोड़ने से व्यापारी को, प्रभाकर को और देव-कन्या को कितने कष्ट भोगने पड़े?

ऊपर के नौ चित्रों में सब एक से दिखाई देते हैं। लेकिन वास्तव में नहीं हैं। उनमें सिर्फ़ दो एक से हैं। बताओ तो देखें, वे दोनों कौन से हैं? अगर न बता सको तो जवाब के लिए ५१-वाँ पृष्ठ देखो।

नींद

बच्चों की नींद पर ही उनका स्वास्थ्य ज्यादातर निर्भर रहता है। अगर वे एक जून भूखे रह जाएँ तो उनके स्वास्थ्य को उतनी हानि नहीं पहुँचती जितनी कि उनकी नींद नियमित न होने से। नीचे मैं एक तालिका देती हूँ, जिससे मालूम हो कि किस अवस्था के बच्चे के लिए कितने घण्टों की नींद चाहिए।

४ महीने तक के बचे के लिए हर रोज़					२० घण्टे
४ महीने	से लेकर	७ महीने	तक के बचे के लिए	हर रोज़	१८ घण्टे
७	,,	१२	,,	,,	१७ घण्टे
१ साल	से लेकर	३ साल	तक के बचे के लिए	हर रोज़	१६ घण्टे
३	,,	५	,,	,,	१४ घण्टे

यह अच्छा नहीं कि माँ बचे को हमेशा गोद में लेकर दुलराती रहे। दूध वग़ैरह पिला देने के बाद बचे को खाट पर या पालने में सुला देना चाहिए। बचे का बिस्तरा गरम और मुलायम हो। एक पतली सी चादर भी ओढ़ा देनी चाहिए। बचे को ठीक वक्त पर सो जाने की आदत डालनी चाहिए। उस कमरे में रोशनी बहुत तेज न हो। साधारणतया बच्चे को गोदी में भी सुलाया जाता है। यह अच्छा नहीं। उसे खाट या पालने में ही सुलाना चाहिए। बचा कभी कभी नींद से जग कर अचानक रोने लगता है। तब ज्यादातर लोग या तो समझते हैं कि नज़र लग गई या बचे पर झुँझलाने लगते हैं। यह ग़लत है। बच्चे अकारण कभी नहीं रोते। हो सकता है कि उनके पेट में या और कहीं दर्द हो रहा हो। इसलिए सोच-विचार कर उसका कारण जान लेना चाहिए। नहीं तो किसी वैद्य या डाक्टर को बुलाना चाहिए।

तुम्हारी दीदी
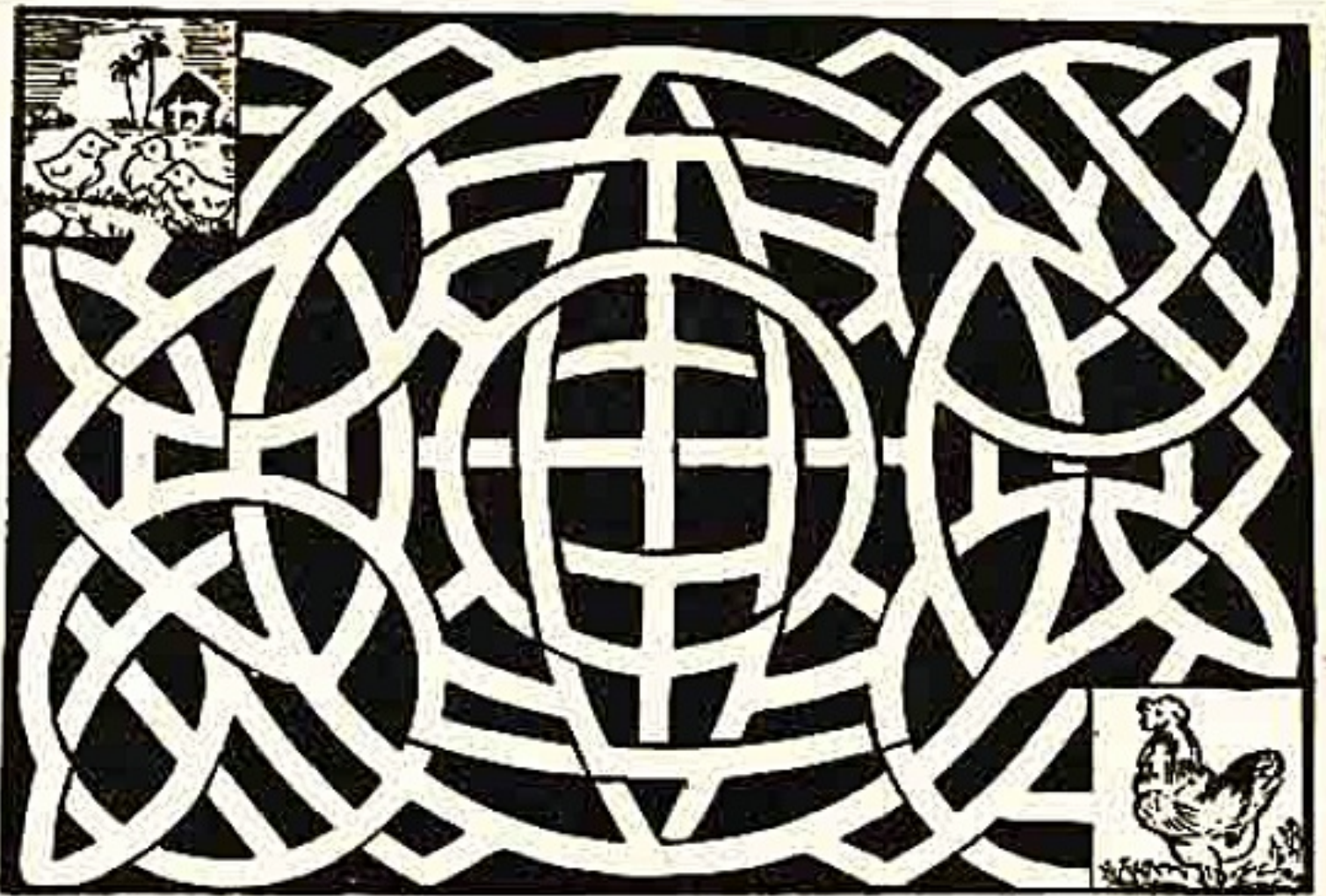
ऊपर के चित्र के एक कोने में मुर्गी और दूसरे कोने में उस मुर्गी के बच्चे हैं। मुर्गी चारे की तालाश में बहुत दूर निकल आई। अब घर लौटने का रास्ता भूल कर सोच में पड़ी है। अगर आपको रास्ता मालूम हो तो मुर्गी को जरा उसके बच्चों के पास पहुँचा दीजिए।

विनोद-वर्ग

निम्न-लिखित संकेतों की सहायता से इस वर्ग को पूरा करो :

१	प			प
२		प	प	
३		प	प	
४	प			प

१. पर्दा गिरना

२. पाप का रास्ता

३. दीपों का त्यौहार

४. शत्रु को कष्ट-दायक (अर्जुन का एक नाम)

अगर न पूरा कर सको तो जवाब ५६-वें पृष्ठ में देखो।

ताश की पत्ती पर गिलास

देखने में यह तमाशा बहुत आश्चर्य-जनक है। लेकिन करने में बहुत आसान। नीचे के चित्र में देखने से पता चलेगा कि एक ताश की पत्ती पर एक गिलास बिना किसी सहारे के टिका है। सोचो तो, यह कैसे मुमकिन है? लो इसका रहस्य सुन लो।

ताश की गड्डी में से एक पत्ती ले लो। उसी गड्डी में की और एक पत्ती भी ले लो। इस दूसरी पत्ती को आधे में मोड़ कर उसका एक हिस्सा पहली पत्ती की पिछली ओर इस तरह चिपका दो जिससे इसका भी पिछला हिस्सा ही दिखाई देता हो। इस पत्ती को कैसे चिपकाना चाहिए, यह बगल के पन्ने की पहली तस्वीर में दिखाया गया है।

उस चित्र में दिखाई देने वाली 'क' और 'ख' की लकीर पहली पत्ती का ऊपरी किनारा है। 'ग' दूसरी पत्ती का आधा हिस्सा है, जो दरवाजों में लगे किवाड़ के पल्ले की तरह खोला और बन्द किया जा सकता है। इस दूसरी पत्ती का आधा हिस्सा पहली पत्ती की पिछली ओर चिपका रहता है। इससे दर्शकों को दिखाते वक्त दूसरी
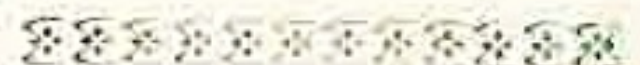
पत्ती का छुटा हिस्सा भी मोड़ देने पर दोनों एक ही पत्ती से दिखाई देते हैं। लेकिन पत्ती को मेज पर खड़ी करते वक्त दूसरी पत्ती का आधा याने 'ग' वाला हिस्सा धीरे धीरे उँगली से उठा देने से पत्ती मेज़ पर एक तिपाई की तरह खड़ी हो जाएगी। यह देख कर दर्शकों को बहुत अचरज होगा।

(१) ग

क ख
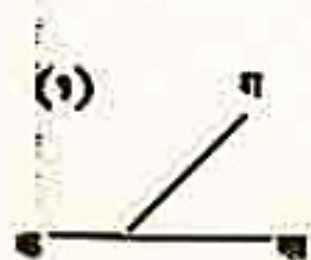
फिर पानी से भरा हुआ एक गिलास लेकर पत्ती पर रखने से वह भी गिरेगा नहीं। क्योंकि उसे नीचे तीन ओर से सहारा मिलेगा। (पहला चित्र देखो!) यह देख कर दर्शकों को और भी अचरज होगा। लेकिन वास्तव में गिलास 'क', 'ख' और 'ग' वाले तीन पायों पर खड़ा होगा।

यह तमाशा दिखा कर तुरन्त पानी का गिलास नीचे रख देना चाहिए। क्योंकि हवा का एक झोंका भी ताश की पत्ती और गिलास को गिरा देने के लिए काफी है। अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारी सारी पोल खुल जाएगी। अन्त में फिर 'ग' वाला हिस्सा मोड़ कर दर्शकों को ताश की पत्ती एक बार उलट-पुलट कर, दिखा देनी चाहिए जिससे उनको कोई शक न हो।
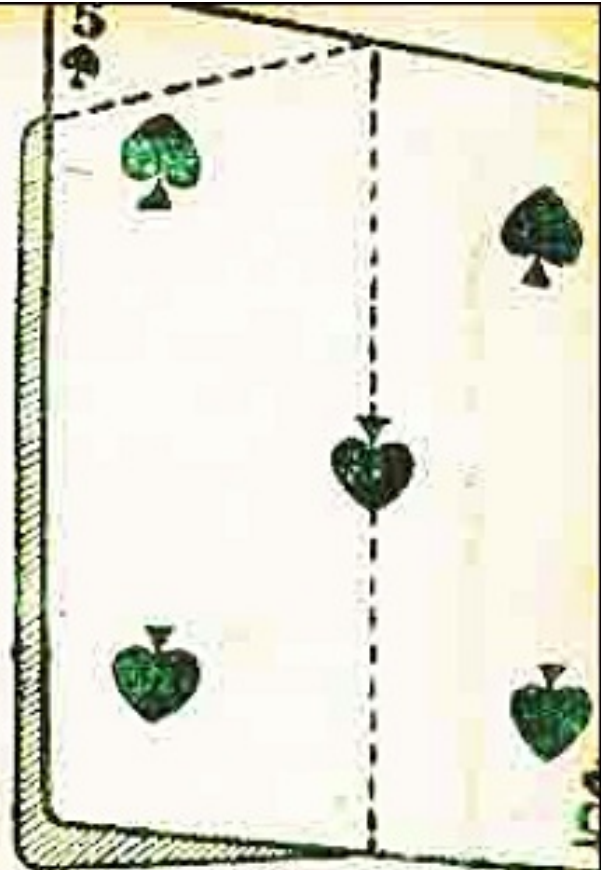
[जो प्रोफेसर साहब से पत्र-व्यवहार करना चाहें वे उनको 'चन्दामामा' का उल्लेख करते हुए अंग्रेज़ी में लिखें।

प्रोफेसर पी. सी. सरकार, मेजीशियन

पो. बा. ७८७८ कलकत्ता १२]

यह हिसाब सीख लो !

अपने दोस्त से कहो कि वह एक वर्ग बना ले। फिर उससे कहो कि वर्ग के एक कोने से दूसरे कोने तक दो आड़ी लकीरें खींच ले। फिर उसे वर्ग के चारों कोनों में चार मन-चाही संख्याएँ लिख लेने को कहो। उसी तरह आड़ी लकीरें जहाँ एक दूसरी को काटती हैं वहाँ भी एक संख्या लिख लेने को कहो। यह ज़रूरी नहीं कि वह वे संख्याएँ तुमको दिखाए। अब तुम उस से कहो कि वह वर्ग के चारों कोनों की संख्याओं का कुल जोड़ तुमको बताए। उसके बाद दोनों ओर की तीनों आड़ी संख्याओं का जोड़ भी बताने को कहो। उसके यह बताते ही तुम वर्ग के बीच की संख्या जान लोगे। इसका एक छोटा सा गुर है। बताता हूँ, सीख लो। समझ लो कि तुम्हारे दोस्त ने निम्नलिखित वर्ग में निम्नलिखित संख्याएँ लिखीं।

२० १४

१७

१५ १९

पहले वह तुम्हें वर्ग के चारों कोनों की संख्याओं का जोड़ कुल ६८ बताएगा। फिर वह एक ओर की तीन आड़ी संख्याओं का जोड़ कुल ५६ बताएगा। फिर दूसरी ओर की आड़ी संख्याओं का जोड़ कुल ४६ बताएगा।

इन तीनों तरह की संख्याएँ जानते ही तुम वर्ग के बीच की संख्या बता सकोगे। इसके लिए तुम दोनों आड़ी संख्याओं को जोड़ो। ५६ और ४६ के जोड़ने से १०२ हुआ। इस १०२ में से पहले बताई हुई चारों कोनों की संख्या याने ६८ निकाल दो। १०२ में से ६८ निकाल देने से ३४ बच रहा न? अब वर्ग के बीच की संख्या ठीक इसकी आधी---याने १७ होगी। इस तरह तुम्हारा दोस्त अपनी मन-चाही कोई भी संख्या क्यों न लिख ले, तुम तीनों संख्याओं को जान लोगे तो बीच की संख्या हमेशा बता सकोगे।
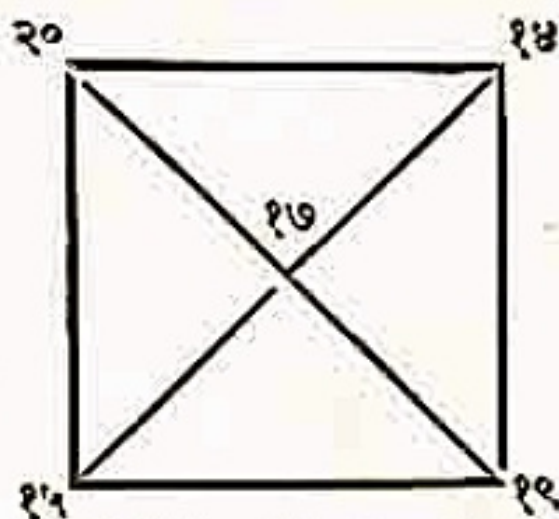
★ ★ ★ ★ चित्र-रेखा ★ ★ ★ ★
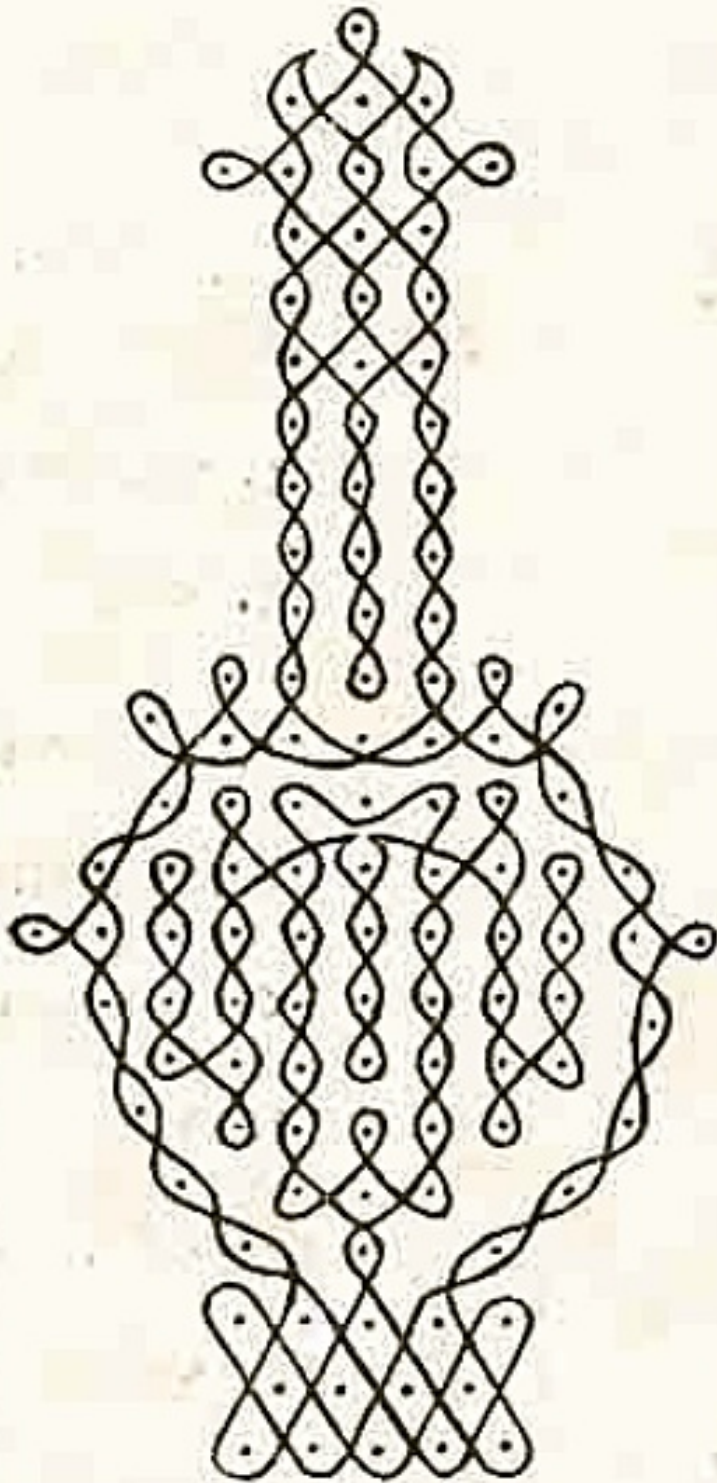
हेच. शांता, मँगळूर
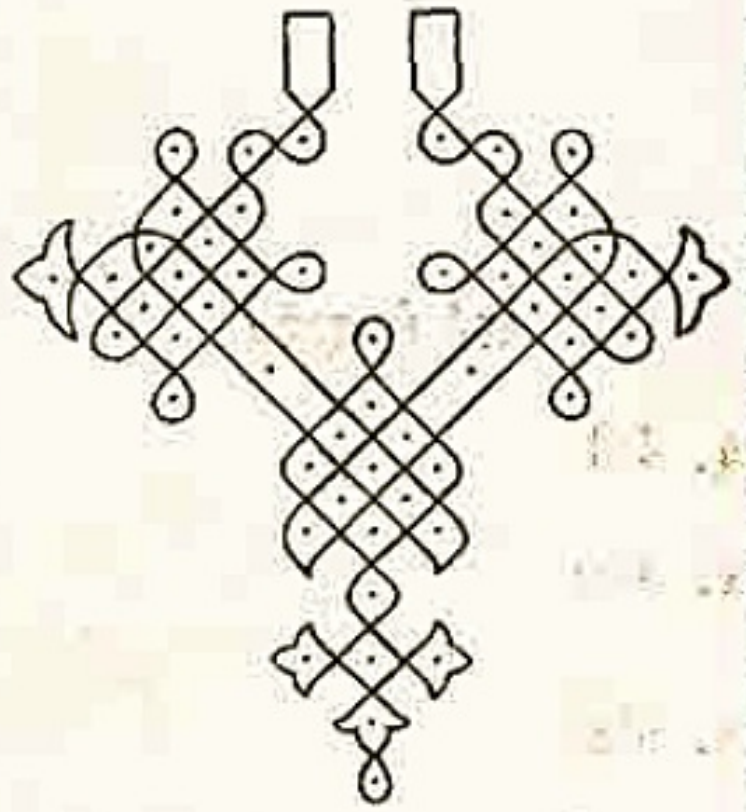
विमलादेवी, नागपूर
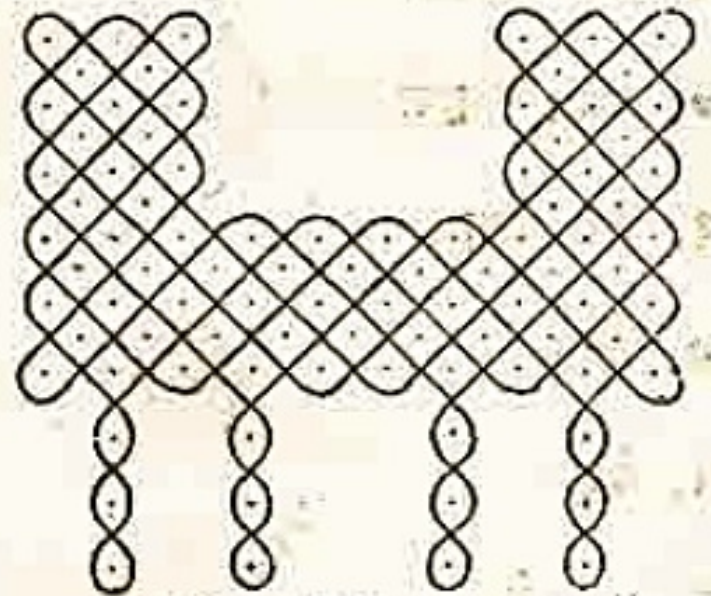
४५-वें पृष्ठ की नौ चित्रों वाली पहेली का जवाब :

एक और सात नंबर वाले दोनों चित्र एक से हैं।

संकेत

बाएँ से दाएँ:

३. हँसी

४. असर

५. चोट

७. अच्छी सङ्गत

१०. ध्यान में डूबा

१२. रास-क्रीडा

१४. हृदय

१५. छेद

१६. सरस्वती

१७. पागल

१८. धोखा

ऊपर से नीचे:
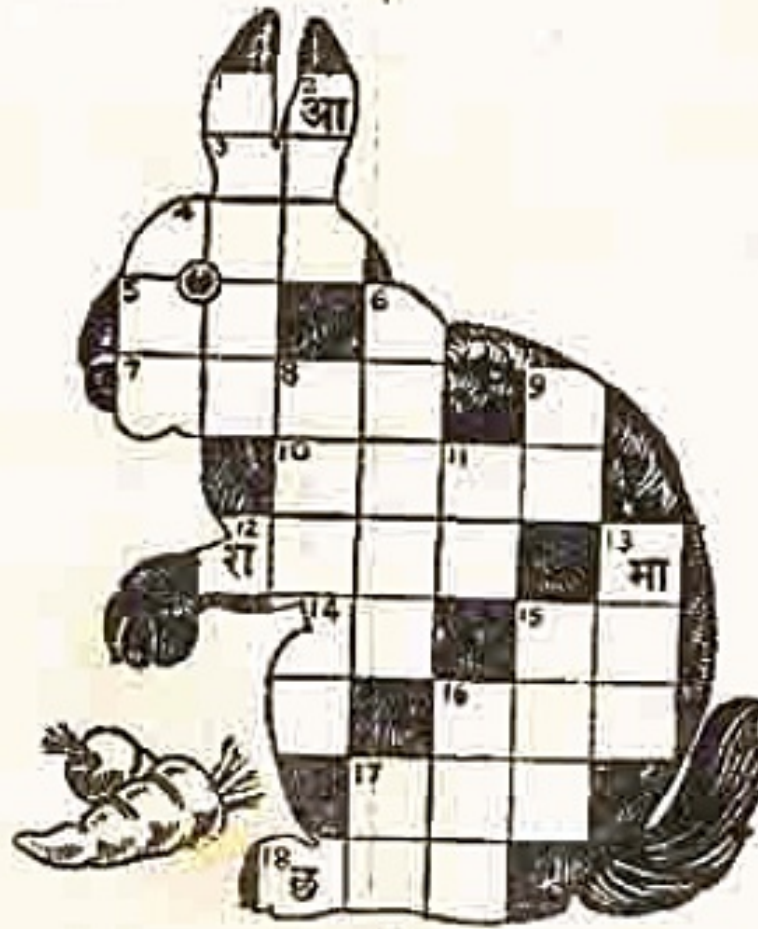
१. एक पवित्र ग्रन्थ

२. मदिरा

४. विदेश-वास

६. हवाई जहाज

८. शाम का वक्त

९. नशा

११. राह

१३. एक लता

१५. कोई कोई

१६. विचार

१७. बालक

बच्चो! ऊपर के चित्र देखो। हरेक चित्र के नीचे उसका नाम लिखो। फिर हर तीन चित्रों के नामों के पहले अक्षर मिला कर बगल में लिख लो। जब तुम उन तीनों पहले अक्षरों को मिला कर पढ़ोगे तो अन्त में दिए हुए अर्थ-वाले शब्द निकल आएँगे। अगर तुम से यह न हो सके तो जवाब के लिए ५६-वाँ पृष्ठ देखो।

चन्दामामा

[प्रेमचन्द गोस्वामी]

*

सबका प्यारा चन्दामामा।
बड़ा दुलारा चन्दामामा।
सब बच्चों का मन ललचाता।
तड़क-भड़क अपनी दिखलाता।

एक माह में जब आता है—
तब न तनिक छोड़ा जाता है।
इसमें छपी हुई सब बातें—
पढ़ते आधी आधी रातें।

चन्दामामा लख-पाते हैं—
तब हम सब खुश हो जाते हैं।
खोल-खाल जब पढ़ते इसको—
तब दे सकते हैं हम किसको?

माँगे कोई, मगर न देते।
चुपके बस्ते में रख लेते।
हम छीना-झपटी के डर से—
जाते इसको ले न मदरसे।

मैं कौन हूँ?

★

मैं चार अक्षरों का
एक पवित्र ग्रन्थ हूँ
जिसे सब लोग चाहते हैं।

मेरा पहला अक्षर
महाराज में है, पर
बादशाह में नहीं।

मेरा दूसरा अक्षर
अरमान में है, पर
मनुहार में नहीं।

मेरा तीसरा अक्षर
नयन में है, पर
लोचन में नहीं।

मेरा चौथा अक्षर
गणतंत्र में है, पर
प्रजातंत्र में नहीं।

क्या तुम बता सकते
हो कि मैं कौन हूँ?

अगर न बता सको तो
जवाब ५६-वें पृष्ठ में देखो।
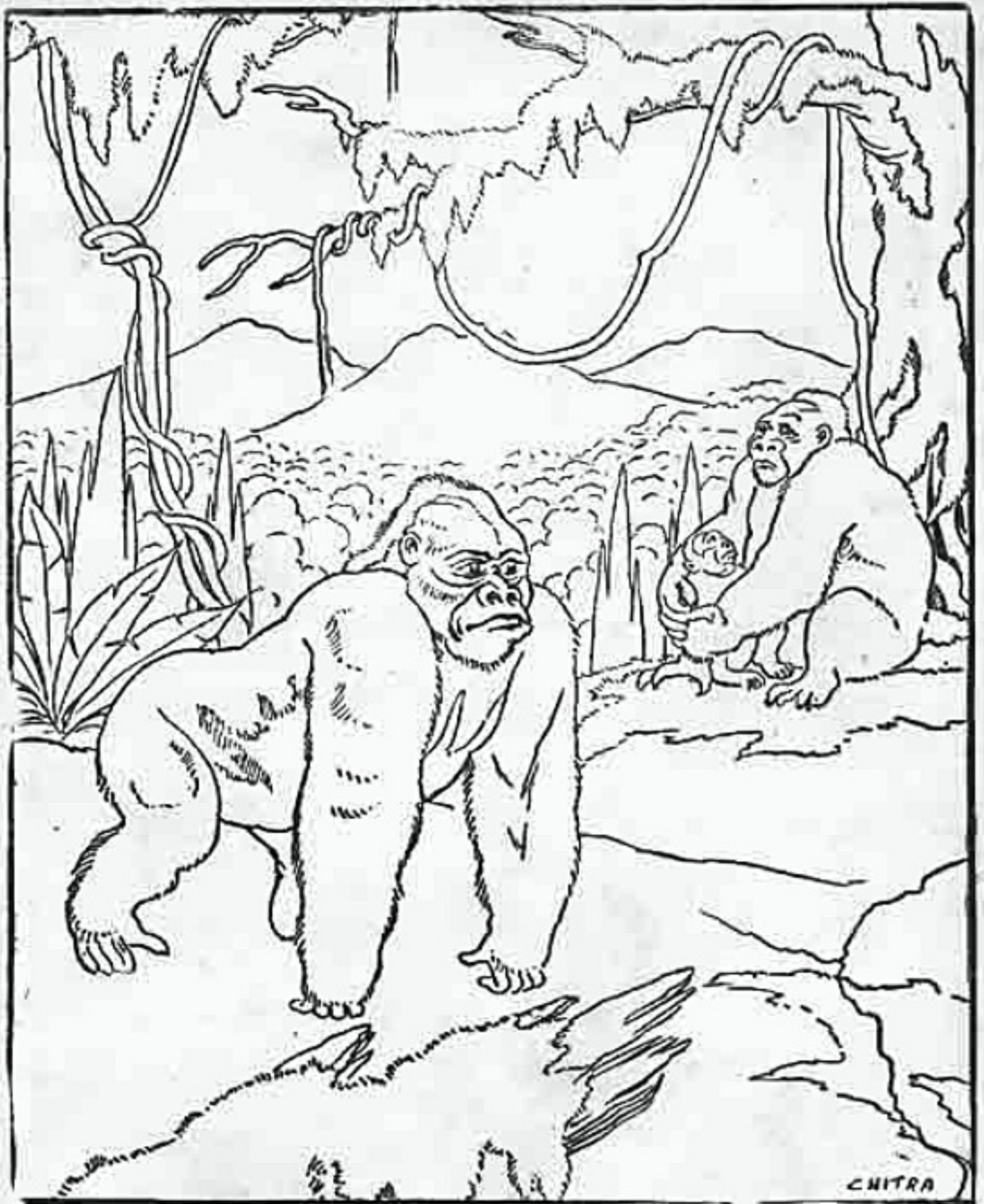
इस तस्वीर को रंग कर अपने पास रख लेना और अगले महीने के चन्दामामा के पिछले कवर पर के चित्र से उसका मिलान करके देख लेना।

चन्दामामा पहेली का जवाब :
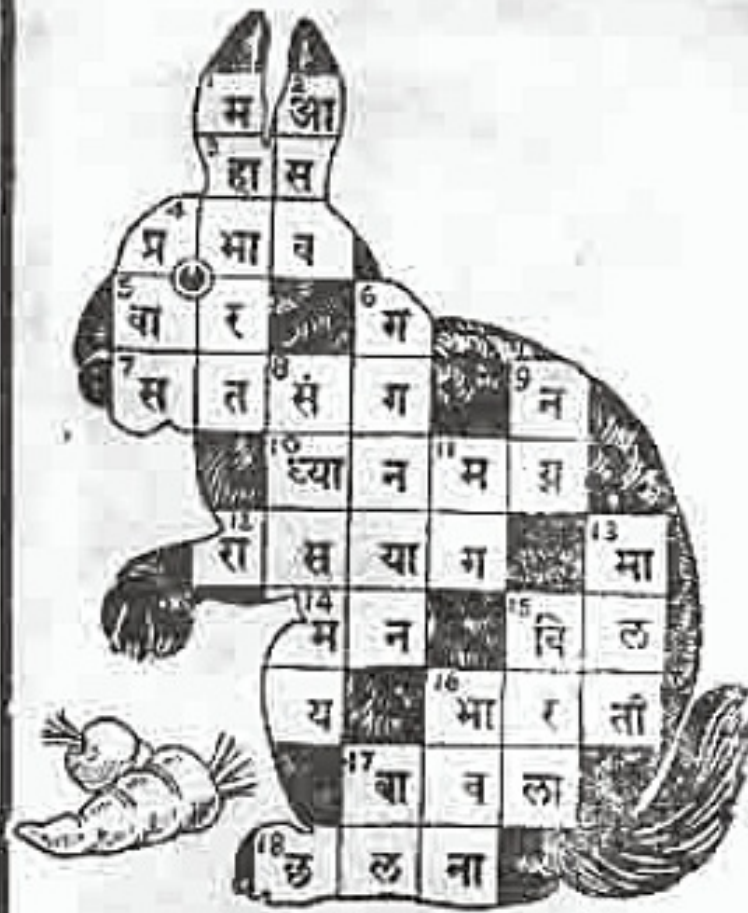
विनोद-वर्ग का जवाब :

प	टां	खे	प
पा	प	प	थ
दी	प	प	बं
प	रं	त	प

चित्रों वाली पहेली का जवाब :

तुरंग; लहर; सीढ़ी; — तुलसी

धनुष; तूणीर; राही; — धतूरा

मेज; हँसिया; दीपक; — मेहँदी

पीढ़ा; पहाड़; लट्टू; — पीपल

सभी हार हैं !

मगर एक अक्षर बदलने से हर एक का माने बदल जाएगा।

*

हार के पहले एक अक्षर रख कर पढ़ोगे तो अन्त में दिए हुए अर्थ-वाले शब्द निकल आएँगे। अगर तुम से न हो सके तो जवाब के लिए उलट कर नीचे देखो।

— हार = बसन्त

— हार = चोट

— हार = सैर

— हार = खुराक

— हार = पर्व

— हार = वध

— हार = पाला

— हार = पुकार

— हार = प्रणाम

'मैं कौन हूँ' का जवाब :

'रामायण'

बहार; प्रहार; विहार;

आहार; त्यौहार; संहार;

नीहार; गुहार; जोहार।

Chandamama, July, '50

Photo by B. Ranganadham

हमें न छेड़ो !

गैंडा